

प्राकृत-पाण्डुलिपि चयनिका

सम्पादक
डॉ. कमलचन्द सोराणी



प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी (राजस्थान)

प्राकृत-पाण्डुलिपि चयनिका

सादर भेंट
जैन विद्या संस्थान समिति

सम्पादक

डॉ० कमलचन्द सोमानी
(पूर्व प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र)
सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर



प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
राजस्थान

प्रकाशकः

अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी,
श्री महावीरजी - 322 220 (राजस्थान)

प्राप्ति स्थान

1. जैनविद्या संस्थान, श्री महावीरजी
2. साहित्य विक्रय केन्द्र
दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी,
सवाई रामसिंहरोड, जयपुर - 302 004

प्रथम संस्करण अगस्त २००६

मूल्य : 250/-

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

पृष्ठ संयोजन

श्याम अग्रवाल,
ए-336, मालवीय नगर,
जयपुर

मुद्रकः

जयपुर प्रिन्टर्स प्रा. लि.,
एम.आई.रोड,
जयपुर - ३०२ ०१७

**पाण्डुलिपियों के उद्धारक
श्रद्धेय स्व. पण्डित चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ
को
सादर समर्पित**

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय			VII
पाण्डुलिपि अक्षर चार्ट			IX
पाठ संख्या	पाण्डुलिपि	पाण्डुलिपि संवत्	पृष्ठ सं.
पाठ - १	भगवती आराधना	१५२१, १७६०	१
पाठ - २	भगवती आराधना	१५२१, १७६०	५
पाठ - ३	अष्टपाहुड	१८०१	९
पाठ - ४	अष्टपाहुड	१८०१	१३
पाठ - ५	अष्टपाहुड	१८०१	१७
पाठ - ६	अष्टपाहुड	१८०१	२१
पाठ - ७	दशवैकालिक	१८३७	२५
पाठ - ८	कुम्मापुत्तचरियं	१८६९	२९
पाठ - ९	कुम्मापुत्तचरियं	१८६९	३५
पाठ - १०	कुम्मापुत्तचरिअं	१८६९	३९
पाठ - ११	उत्तराध्ययन	१८९५	४३

पाठ - १२	उत्तराध्ययन	१८९५	४७
पाठ - १३	उत्तराध्ययन	१८९५	५१
	राजस्थान में प्राकृत-अपभ्रंश की पाण्डुलिपियाँ : परिचय		५५
	पाण्डुलिपि का आधुनिक पद्धति में रूपान्तरण		
पाठ संख्या	पाण्डुलिपि	पाण्डुलिपि संवत्	पृष्ठ सं.
पाठ - १	भगवती आराधना	१५२१, १७६०	६७
पाठ - २	भगवती आराधना	१५२१, १७६०	६९
पाठ - ३	अष्टपाहुड	१८०१	७१
पाठ - ४	अष्टपाहुड	१८०१	७२
पाठ - ५	अष्टपाहुड	१८०१	७३
पाठ - ६	अष्टपाहुड	१८०१	७४
पाठ - ७	दशवैकालिक	१८३७	७५
पाठ - ८	कुम्मापुत्तचरियं	१८६९	८६
पाठ - ९	कुम्मापुत्तचरियं	१८६९	८७
पाठ - १०	कुम्मापुत्तचरियं	१८६९	७८
पाठ - ११	उत्तराध्ययन	१८९५	७९
पाठ - १२	उत्तराध्ययन	१८९५	८०
पाठ - १३	उत्तराध्ययन	१८९५	८१

प्रकाशकीय

‘प्राकृत पाण्डुलिपि चयनिका’ विद्यार्थियों के हाथों में समर्पित करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है।

यह कहना निर्विवाद है कि भारत की संस्कृति व उसका साहित्य मौखिक परम्परा से रक्षित होता हुआ पाण्डुलिपियों के माध्यम से सुरक्षित रहा है। छापेखानों के विकास के पूर्व स्वाध्याय व ज्ञान-प्रसार का आधार पाण्डुलिपियाँ ही थीं। एक ही पाण्डुलिपि की कई प्रतिलिपियाँ करवाकर विद्वानों एवं स्वाध्यायियों को अध्ययनार्थ उपलब्ध कराई जाती थीं। इस तरह एक ही पाण्डुलिपि की प्रतियाँ विभिन्न स्थानों पर प्राप्त हो जाती हैं। विभिन्न पाण्डुलिपि संग्रहालय इसी प्रवृत्ति के परिणाम हैं। नागौर, जैसलमेर, पाटण, जयपुर आदि अनेक स्थानों के पाण्डुलिपि संग्रहालय भारत की सांस्कृतिक निधियाँ हैं। हमें गौरव है कि हमारे पूर्वजों ने इन संग्रहालयों की सुरक्षा करके संस्कृति के संरक्षण में जो योगदान दिया है वह अपूर्व है और भावी पीढ़ी के लिए एक उदाहरण है। इन संग्रहालयों में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि विभिन्न भाषाओं में लिखित विभिन्न विषयों की पाण्डुलिपियाँ संगृहीत हैं।

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि पाण्डुलिपियाँ एक विशेष पद्धति से लिखि जाती हैं। उनमें शब्द मिले हुए होते हैं। मात्राएँ विशेष प्रकार से लगाई जाती हैं। कोई पैराग्राफ नहीं बनाया जाता है। कोई-कोई अक्षर विशेष प्रकार से लिखे जाते हैं। उद्देश्य यह होता है कि कम से कम स्थान में अधिक से अधिक विषय सामग्री प्रस्तुत की जा सके। छापेखानों के विकास के बाद मुद्रित पुस्तकों की पद्धति बदली। शब्द अलग-अलग किए गए। मात्राएँ उचित स्थान पर लगाई गईं और अक्षरों का आकार नियत कर दिया गया। अतः मुद्रित पुस्तकें आसानी से पढ़ी जाने लगीं, किन्तु धीरे-धीरे पाण्डुलिपि को पढ़ने वाले नगण्य होते गए। आज हम प्राकृत भाषा को भूल गए और जब भाषा ही भूली जाए तो उस भाषा की पाण्डुलिपि को समझना तो असम्भव ही है। इस भाषा को पुनर्जीवित करना राष्ट्रीय धर्म है और सामाजिक-सांस्कृतिक आवश्यकता है।

प्रसन्नता की बात है कि दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी ने जैनविद्या संस्थान के अन्तर्गत १९८८ में 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' की स्थापना करके प्राकृत भाषा को सिखाने का कार्य पत्राचार के माध्यम से प्रारम्भ किया। इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु 'प्राकृत रचना सौरभ', 'प्राकृत अभ्यास सौरभ', 'प्राकृत गद्य-पद्य सौरभ' भाग-१, २ आदि कई पुस्तकें अपभ्रंश साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हैं। इसी क्रम में 'प्राकृत पाण्डुलिपि चयनिका' विद्यार्थियों के लिए प्रस्तुत की जा रही है। इसमें जिन काव्याशों को संग्रह किया गया है उनका आधुनिक पद्धति से रूपान्तरण भी इसी पुस्तक में दे दिया गया है। विद्यार्थी पाण्डुलिपि के काव्याशों और रूपान्तरण की तुलना करके पाण्डुलिपि को पढ़ना सीख सकेंगे और उसका समुचित अभ्यास कर सकेंगे।

इस चयनिका में राजस्थान के उन शास्त्र भण्डारों का परिचय भी प्रस्तुत है, जहाँ प्राकृत-अपभ्रंश की पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं। इस सामग्री का चयन मुख्यतया जैनविद्या संस्थान (पूर्व में साहित्य शोध विभाग) द्वारा प्रकाशित एवं डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल तथा पण्डित अनूपचन्द न्यायतीर्थ द्वारा सम्पादित 'राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूची' के पाँच भागों से किया गया है।

उक्त चयनिका के प्रकाशन के लिए अपभ्रंश साहित्य अकादमी के विद्वानों विशेषतया श्रीमती शकुन्तला जैन एवं श्रीमती शशिप्रभा जैन के आभारी हैं।

मुद्रण के लिए जयपुर प्रिन्टर्स प्राइवेट लिमिटेड धन्यवादार्ह हैं।

नरेश कुमार सेठी अध्यक्ष	नरेन्द्र पाटनी मंत्री	डॉ. कमलचन्द सोगाणी संयोजक
प्रबन्धकारिणी कमेटी दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी		जैनविद्या संस्थान समिति जयपुर

9 अगस्त, 2006

तीर्थकर श्रेयांसनाथ मोक्षकल्याणक दिवस

वीर निर्वाण सम्वत् 2532

ક કિ કુ કુ કા કા કી કાં કા કાં કા કા
કે કે કિ કે કા કે કાં કે કાં કે કાં કે કાં કે

કિ કિ કા કા કા કા કા કા કા કા કા
કિ કિ કા કા કા કા કા કા કા કા કા

लघूणयस मत्तंरकयसुरकंलहदिमोरकं॥ध२॥सप्ततं॥१॥ अरुहंतसिध्वेदियपव
यणआधरियसवसाधूसु॥तिवंकेशिभतीगिद्विदिगिंतेणभवेण॥४३॥संवेगज्ञाणद
रणाणिससह्रासंदरोवसिक्कंपा॥असदहाजिणभतीतससभंणचिसंसारं॥४४॥एया
वसाससहाजिणभतीउगाइणिवारेडं।पुणाणियधरेडंआसिधिवरंधरमुहालं४५॥त
दसिध्वेदिणपवयणेश्र॥धरियसवसाधूसु।भतीहोदिसमन्नासंसारुचेदणेतिव
धहा।विजाविभतिवंतससिध्विमुधयादिहोदिसफालाथकिहपुणणिसुदिवांजंमि
किहदिअभतिमंतसस॥४६॥तेसिंआराधणणयगाणंणकरेऊजोणारेनसिंधतिंधि
संजभंनोसालिसोऊसरेववदि॥४७॥वीणणविराणससंइछदिमोवासभद्रणणवि
णआराधणसिंठेत्तोअरुधमभतिमकरंतो॥४८॥विधिणंकदसससससजहाणि

७

द्यं हव दिवा संत ह अर हा दिश जती एण चर एण सं स एण त वा एं ॥ ५० ॥ वं द एण ज ती मे ते ए
 चां व मि हिला हि वा य य न भर हो द विं द या डि हे रं प तो ज हा ग ए ध रो या ॥ ५१ ॥ ज ती आ य ध
 एण पु र सार म एण म दि द न वि मु च ले स ले सं सार सार ख य के रं मा मो र्त्ति ए मो कारं ॥ ५२ ॥
 अ र हं त ए मो कारे ए के वि हे व रु जो म र एण काले मो जि ए व य ए दि हो सं सा खे द ए स
 म चो य जे जा व एण मो कारे ए वि एण स म न एण ए च र एण त वा ॥ ए ज ते हो ति स म चो य सं सा
 खे द एं का उं ॥ ५३ ॥ च उं ग ए से सा ए एण य गो ज द प व त र्त्ति हो दि त ह भा व एण मो कार ॥
 ए म र एण त वा एण ए च र एण एं ॥ ५४ ॥ आ रा ध एण य डायं गे ए ह त स स क करे एण मो कारे म वि
 स न य य डायं ज ह ह चो धे नु का म स ॥ ५५ ॥ अ एण ए वि य गो वि आ रा धि ता म दो एण मो
 कारं ॥ चं पा ए से दि कु ले जा द्या य तो य सा म सां ॥ ५६ ॥ ए मो कारं ॥ एण ए च न ग र दि द्ये ॥ ५७ ॥

एणसकृच्चित्तिगाहोकाठं एणंअंक्रसभूदंमससकृच्चित्तहच्छिस्स ॥५६॥ विज्जजह
 पिसायंमुहुवुत्ताकेरिपुरिसवसं एणंदिदयपिसायंमुहुवुत्तंतहकरेदि ॥५७॥ एणुवस
 मइंकरहसप्येजहभंतेणविधिणापउत्तेण ॥ तहदिदयकिहसप्येमुहु ॥ वउत्तेण
 एणोण ॥ ६० ॥ आरसुवेविमत्तोहठीणियमिऊदेवरत्ताण ॥ जहतहाणियमिऊदि
 सोणएणवरत्ताएमएहठी ॥ ६१ ॥ जहमकुडुर्णखणमविमकेठोअच्छिउंणसक्रेइत
 हस्वणमविमकेठोविसएहिंविणएहोइमणे ॥ ६२ ॥ तमहासेउदुहणेमणमकृ
 डुर्णजिणोवणसेण ॥ एमेद्वोणियदंत्तोसोदोसंणकहिदिसे ॥ ६३ ॥ तमहाणामुवउ
 गोखवयस्सविसेसुंमदाजणोदो ॥ जहविंधणोवउंणोदंदयवेगंकरितस्स ॥ ६४ ॥
 एणपदीधोपऊलइजसहियएविमुधलेसस्स ॥ जिणदिदोमोरकमगोपणस ॥

पाठ २
भगवती आराधना

एतद्यंनतस्सचि॥६५॥ एणुजोवोणुजोवस्सणचिपडिघाटेपहीवेदिरेवजमय्यं
 धुरेणणजंमसेसं॥६६॥ एणंययासनेसोधनेत्रोसंजमोयगुत्तियरोतिहंमिय
 मज्जेगेमोरकेजिणसासणेदिहो॥६७॥ एणंकरणाविहणंलिंणाहणंघदंसणवि
 क्कणं॥संजमहीणोयतवेजोऊणदिणिरुयंऊणदिहोएणुजोएणविणजो
 उच्चदिमोरकसणाभुवगंउं॥गंउंकडिल्लमिच्छदिच्छंधकंउंअध्यारंमि॥६८॥अइदायं
 उंसिलोरोणजमोभरणउकिडिनेशयाधतोयसुमामसंकिंपुणहिएउत्तमुनेण
 ॥९०॥ ददसुष्मोमूलहदोयंअणोक्कारमेत्तमुदणो॥उवइल्लोकालगदोदिवेजो
 मदहीजा॥९१॥ एयत्तंमिदेषयलेसद्वोवारसविधेसुदरंकेभेभवेत्तएणुविंतेउंअलि
 एणविसभउविसेण॥९२॥ एक्कंमिदिजंमिघदेसंभेगंवीदरागमगंमिगंउदिणशेग

अत्रिकंतंमरणंतेणमोक्षं॥१३॥ एणं गं॥ १३॥ परिहृत्तु जीवणिकायवहंमणव
 एणयजेगेसिं। जावकीवंकदकारिणुमेदिदिंउधुजे॥१४॥ जहेणपियंउरंरंरं
 हेतेसिंमिजाणजावाणं॥ एवणध्वाअयोवमिर्बेजीवेसुहेहिषदा॥१५॥ एणसुहादि
 परिदाविदेजीवाणंघाहणंकिच्चापडिकारंकाउंजेमातवितेसुत्तनसुसदिं॥१६॥
 रदिअरदिहरिसअयुसुगत्तदीणत्तादिउत्तोवि। भोगपरिभोगहेउंमाकविचिंते
 हजीववहं॥१७॥ मधुकरिसमक्रियमउंवसंजभंथोवथोवसंगलियं। मेलोक्कसच्चग
 मारणावात्तरेहिमाजहसु॥१८॥ उरकेणअदिमाणुसुजादिमदिसवणदंसणव
 रिंत्ताउरकजियसामसंमाजहसुभणंवअगणंते॥१९॥ तेत्तोक्कजीविदादोवेरेहिंएक्क
 दरगन्निदेवेहिंअणिदोकोतेलोक्कवेरुसंजीवि। दंमुच्चाग॥२०॥ गंएवंतेलोक्कण

द्विसंस्सजीविदंतम्हा॥ जीविदघादे जीवस्सदोदितेलो कूवाइसमो॥ ६२॥ एत्ति
 एदेअप्यंआयासादेअणयंणचिअहतहजाणमहंणवयमेहिंसासमंअठि
 ॥६२॥ जहयव्वा सुमेअवाअेदेइसचकोयंअित्तहजाणसुअवायंसीले सुवदे सु
 यअहिंसा॥ ६३॥ सवोविअहायोसलीगोअमीएसवदीवुदधी॥ तहजाणअहिंसा
 एवदंशुएसीलाणित्तिदंति॥ ६४॥ कुअंतस्सविअतंतंवेणविणाएतंतिअहअरय
 अरएहिंविणायअहाएहंणेमीउंचकस्स॥ ६५॥ तहजाणअहिंसाएविणएयंसी
 लाणित्तिंतिस्सवाणित्तिस्सेवरकणहंसीत्तिवदीवसस्सस्स॥ ६६॥ सीलंवदंशु
 एवाएणंणिसंभदासुद्ववाअीजीवेहिंसंतस्सअसवेविणिरअयाहोति॥ ६७॥ स
 वेसिमासमाणंदिदयंअधोवसवसहाणं॥ सवेसिवगुंटेणणंयिंदोसायअहिंसाइ ६८

जम्हाञ्चसववयणादिहिंरकेपरस्सहोदिजितपरिहरोतन्हासवेविगुणाञ्चहिंसाए॥
 ॥८०॥ गोवंजगिंठिवधमेतणियतीशदिजवेपरमधम्मो॥ परमेधंमोकिहसोणहोइ
 आसव्वभूदद्या॥ ८०॥ जंजीवणिकायवधेणविणाइंदिथकदंसुहेणठि। जमिसुहेण
 स्संगोतमहासोरकदिञ्चहिंसं। ८१॥ जीवोक्सायवजलोसंजोजीवाणघादहंकरण
 दिसोजीववधंपरिहरंदिमदंजोजिदकसाठै॥ ८२॥ आदणोणिकेवेवोसरणेठा
 एणमणसयणेषु॥ सव्वेअप्पमत्तेदयावेहोदिञ्चहिंसाए३॥ काएसुणिरारं
 भेफासुगंजोजिमिणएणदिगमि॥ मणवथणकाययुत्तमिहोदिसयलाञ्चहिंसा
 ८३॥ ८४॥ आरंभेजीववधोअप्पासुगसेवणेअणुमोदि॥ आरंभादोसुमणेणएणर
 इणविणाचरदि॥ ८५॥ सवेविगसंबंधायत्तासवेणसव्वजीवेहिंवेआरंभोजावेसं

पाठ ३
अष्टपाहुड

अष्टपाण
१

॥१॥ उँनमः सिधेस्यः ॥ काऊणणमोयारं ॥ डिणवरवसदस्सवहमाणस्सा ॥ दंसणमगंवेच्छा
मिाऊहाकम्मंसमासेण ॥ २ ॥ दंसणमूलोद्धम्मो ॥ उवइठं डिणवरेहिसिस्साणं ॥ तंसोऊणस
कम्मो ॥ दंसणदीणेणवंदिब्वे ॥ ३ ॥ दंसणत्तघात्तघा ॥ दंसणत्तघस्सणच्चिणिव्वाणं ॥ सिञ्जंतिवि
रयत्तघा ॥ दंसणत्तघाणसिञ्जंति ॥ ४ ॥ सम्पत्तयणत्तघा ॥ जाणंतावऊ विदाइसच्चाइ ॥ आरा
ट्ठणाविरहिया ॥ नमंतितत्तच्चेवतच्चेवा ॥ ५ ॥ सम्पत्तविरहियाणं ॥ सुहुविउगंतवंवरंताणं ॥ एलदं

तिबोहिलादं॥अविवाससहस्मकोडीदिं॥ ५॥सम्मत्रणाणदंसण॥बलवीरियवहमाणजेस
 वे॥कलिकलुसपावरदिया॥वरणाणीजंतिअइरेण॥ ६॥सम्मत्रसलिलयवदो॥णिच्चंदियण
 णपवदणजस्म॥कम्मवालुयवरणं॥वंकच्चियणासएतस्म॥ ७॥जेदंसणेसुत्तहा॥णाणेत्तहा
 चरित्तत्तहाया॥एदेत्तहावित्तहा॥सेसंयिजणंविणसंति॥ ८॥जेकोविधम्मशीलो॥संजमतव
 णियमजोगगुणक्षरी॥तस्मयदोसकदंता॥तग्गात्तम्मत्रणंदिंति॥ ९॥जह्मूलम्मिणिके॥ १०

अष्टाष्ट
२

नमस्परिवारण द्विपरिवर्ही॥तद्वज्रिणदंसणत्तडा॥मूलविण्णणसिञ्जंति॥२०॥ऊदमूलार्जत्वं
क्षे॥सादापरिवारबज्रगुणोद्देश॥तद्वज्रिणदंसणुमूलो॥णिद्विजेमोरकमगगस्सा॥२१॥डेदंस
णे सुत्तडा॥पापाडंतिदंसणधराणं॥तेहोंतिलुद्धमूद्या॥वोदीउपुडद्वदतेसिं॥२२॥डेविपडं
तिनतेसिं॥जाणंतलज्जगारवत्तयण॥तिसिंपणच्चिवोदी॥पावंअणुमोद्यमाणं॥२३॥उविदं
पिगंश्चिचाण्तीसुविजोएसुसंजमदादि॥णाणम्मिकरणसुधे॥अप्रसणेदंसणंद्देश॥२४॥सा

मन्नादोणं एणदोसन्नतावउवलदी॥उवलधिपयञ्चेपुणु॥सेयासेयंविद्याणेदिं॥

॥१५॥सेयासेयविद्यू॥उददुस्मीलसीलवंतोवि॥सीलफलेणपुदयं॥तत्रोपुणुलदृशि

द्याणं॥१६॥जिणवयणुसदमिणं॥विसयसुदविरेयणंअमित्तन्नं॥जरमरणवादिद

रणं॥खयकरणंसन्नडरकाणं॥१७॥एकंजिणस्मरूवं॥विदियंउक्किठसावद्याणं॥अव

रुदियायतइयं॥चउञ्चपुणुलिगदंसणं॥१८॥अद्वयणवपयञ्चा॥पंचवीसन्नतञ्चनि

पाठ ४
अष्टपाहुड

परिहरधमेअहिंसाए॥१५॥ पव्वज्जसंगचाए। पयहसुतवेसुसंजमेत्तावे। दोइसुविसुइप्राणं। लि
मोदेवीयरायत्ते॥१६॥ मिच्चादंसणमये॥ मलिणेअणाणमोद्धोसेहिं॥ वसंतिमूढजीवा॥ मि
च्चत्तावुद्धिउदयेण॥१७॥ समदंसणपस्सदि॥ जाणदिणणेणद्वंपजाया। समेणवसह
हदिवा। परिहरदिचरित्तजेदोसा॥१८॥ एएतिषविजावा। दवंतिजीवस्समोद्धरदिवस्स॥
णियगुणआराहंतो। अचिरेणविकम्मपरिहरइ॥१९॥ संस्विज्जमसंस्विज्जांगुणंचसंसारि

अष्टपाठ
७

मेरुमित्राणां॥सम्पन्नमणुचरंता करंतिडरकरकयंधीरा॥२०॥डविहंसंजमचरणं।सायारं
तद्द्वेणिरायांसायारंसगंथोपरिग्नहरद्वियंणिरायां॥२१॥देसणवद्यसामाश्याणे
सहसच्चिन्नरायनत्वेयावंनारंनपरिग्नह।अणुमणुअदिष्ठदेसविरदोय॥२२॥पंचेवअणुवय
श।गुणव्याशतदेवतिलेय।सिरकावेयवत्तारि।संयमचरणंचसायारं॥२३॥शूलेतसकायव
हे।शूलेमोसेतितिरकशूलेयापरिहारोपरिमे।परिग्नहारंनपरिमाणं॥२४॥दिसिविदिसिमा

एषदमं॥अणञ्चदंडस्सवज्जणंविदियं नोगोपनोयपरिम।इयमेवगुणव्वत्तातिसि॥२५॥सामा
 इयंचपटमं।विदियंचतदेवपीसहंनणियां।तइयंचअतिदिउज्जं।चउच्चंसह्नेहणअंते॥२६॥
 एवंसाचअधम्मं॥संजमचरणंउदेसियंसयलं॥सुधंसंजमचरणं॥ऊधम्मेलिक्कलंवोच्चे॥२७॥
 पंचेदियसंवरणं।पंचवयापंचविंसकिरियासु।पंचसमिदितयगुत्तिं।संजमचरणंणिरायारं
 ॥२८॥अमणुसेयमणुसे।सजीवदच्चेअजीवदच्चेया॥एकंरोदिरायदेसो॥पंचेदियसंवरोन

अष्टपाण
८

णित् ॥ ३९ ॥ द्विसाविरश् अद्विसा ॥ असञ्चविरश् अदञ्चविरः इति ॥ उरियञ्चवंतविरश् पंचमसं
गमिविरदीय ॥ ३९ ॥ सादंतिजंमहद्व्या ॥ आद्यरियञ्जंमहद्व्या ॥ उंचमद्व्याणितदो ॥ मह
द्व्याइंतद्व्याइं ॥ ३२ ॥ वद्यगुत्तीमणगुत्ती ॥ इरियासमदीसुदाणणिकेवो ॥ अवलोयनोयणा
एद्विसाएजावणद्वोति ॥ ३१ ॥ कोदत्तयदासलोदा ॥ मोदाविवरीयञ्चवणाचेव ॥ विदियस्सना
वणाए ॥ एयंवेवद्यतदाद्वोति ॥ ३३ ॥ सुसायारणिवानो ॥ विमोचियावासञ्जंपरोधंचाएसणसुद्विस

पाठ ५
अष्टपाहुड

सावर शंठ
वेद वेदिका वेदिका वेदिका

ऊसोमुणेयवो॥खेडेविणकायव्वं।पाणिपतंसचेलस्स॥७॥हरिहंरव्वेविणरो।समंग
व्वेइएइभवकोडी।तद्विणपावइसिद्धिं।संसारव्वोणुणोत्तणियो॥८॥उक्किइसीद्वरियं
॥वऊपरिकम्मोयगरुयत्तारेया।जोविहरइसव्वंदं।पावंगव्वेदिद्वदिमिच्चत्तं॥९॥णिच्च
त्तपाणिपतं।उवइदंपरमज्जिणवरिंदेहिं।इकोविमुखमग्गो।सेसायअमग्गयासव्वे॥१०॥
जोसंजमेसुसहिउ।आरंनपरिग्गदेसुविरउवि।सोहोइवंदणिज्जो।ससुरासुरमाणसेले

अष्टा
११

११६ जेवावीसपरीसहासदंतिसत्रीसपहिसंजुत्तातेज्जंतिवंदणीया॥कम्मरकवणि
ऊरासाहू॥११॥अविसेसीजिलिगीदंसणणणणसम्मसंजुत्ता॥विलेणपरिगदियातेत्त
वियाइच्चणिक्याया॥१३॥इच्चायारगिद्वं सुत्तस्सिउज्जिच्चिदणकमांठाणिवियसम्मत्तं
परलोइसुदंकरोदोइ॥१४॥अदुपुणअप्पाणच्चदिधम्मंसुकरेदिणिरवसेसाइतद्विण
वदिसिद्धिंसंसारच्चोपुणेत्तणियो॥१५॥एणकारणेणयातंअप्पासहदेहतिविदेण

११

जेणयलदेहमोरकं। तंजाणिऊदपयत्रेण॥२६॥ वालग्नकोडिमित्रं। परिमद्गद्गंणदोइसा
 क्कणं। नुंजेइयाणिपत्रे। दिस्सणंइकवाणमि॥२७॥ ऊदऊइइवसरिसो। तिलउसमित्रंणि
 द्दिह्वेसु। ऊइलेइअपवऊयं। तत्रोपुणुजाइणिगोयं॥२८॥ ऊस्सपरिमद्गद्गं। अ
 प्पावुऊयंवद्वइलिंगस्सा। सोगरद्दिउजिणवयणे। परिगद्दइउणिरायारो॥२९॥ पंच
 मद्दव्यजुत्तो। तिद्दिगुत्तिद्दिंजीससंऊदोइइ। णिगंथमुक्कमग्गो। सोहोदिऊवंदिणिऊो

अष्टपाठ
१५

या॥१॥ उदयं चतुर्लिंगं उक्लिङ्गं अवरसावयाणं॥ निस्कंभमेक्षपत्ने॥ समिदीनासेणमो
णेण॥ २॥ लिंगं इच्छीणद्वदिचुंजइपिंडं सुएत्यकालमि॥ अक्रियविश्कवच्चावडावर
णेणचुंजेइ॥ ३॥ एविमिश्नदिवच्चधरो॥ जिणसासणजइविहोइतिच्चदरो॥ एगोविमुरकम
गो॥ सेसाउम्मग्रयासणं॥ ४॥ लिंगं मयइच्छीणं॥ थणंतरेणादिकरकदेसेसु॥ तणित्स्स
ज्जमोकाउ॥ तेसिंकह्दोइपव्वज्जा॥ ५॥ उदं सणेण सुधा॥ उत्तममग्नेण साविसंजुत्ता॥ धो

१५

पाठ ६
अष्टपाहुड

ष्टपाठ
२४

साहोश्चंदणीयाः।। एिगंथासंजदापडिमा ॥ ११ ॥ दंसणञ्चणंत एणं। अणंतवीरियञ्चणंत
सुस्काय। सासदसुस्कञ्चदेहा। मुक्काकम्मवंधेहिं ॥ १२ ॥ एि सुवममचलमरवोहा। एिम्वि
याजंगमेणरूवेण। सिद्धवाणम्मिठिया। वोसरपडिमाक्खोसिद्धा ॥ १३ ॥ पडिमा ३। दंसेइमो।
रकमयं। सम्मत्तंसंजप्रसुधमंवा। एिगंथाणणप्रयं। डिणमत्तेदंसणंतणिवं ॥ १४ ॥ ऊहकुद्धं
गंधमयं। त्तवदिऊरवीरंसधियमयंवावि। तहदंसणम्मिसमां। एणमयंहोइरूवञ्च ॥ १५ ॥

२४

॥दंसणं॥३॥जिणविंवणणमयं॥संजमसुहं सुवीयरायं॥जंदेइदिरकसिरका॥कम्मरक
 यकारेणिसुहा॥१५॥तस्सयकरऊपणमं॥सव्वंउऊं चविणयवच्चच्चं॥उस्सयदंसणण
 णं॥अच्चिकवंचेयणानावो॥१६॥तववयगुणेदिंसुघो॥जाणदिपिच्चेइसुघसम्मत्तां॥अरदं
 तमुद्दसा॥दायारीदिरकसिरकाय॥१७॥जिणविंवं॥५॥हदसंजमसुहाणं॥इंदियमुद्दकसा
 यददमुदा॥मुद्दइहणणणं॥जिणसुहाणं॥सात्रणिया॥१८॥जिणसुहा॥६॥संजमसम्मत्ता

ष्टया
१५

स्सय। सुशाणजोयस्समोरकमग्नस्स। णणेणलददिलरकं। तस्साणां चणायच्चं। १०। उद
णविलददिज्जलरकं। रद्विर्वकंडस्सवेशयविहीणे। तद्वणविलरकदिलरकं। अस्साणीमोरक
सः मग्नस्स। ११। णाणंपुरिस्सद्वदि। लददिसुउरिसोविविणयसंजुत्तो। णणेणलददिल
रकं। लरकंतोमोरकमग्नस्स। १२। मद्धणुदंजस्सथिरं। सुइयुणवाणसुअच्चिरयणत्तं। य
रमच्चवधलरको। णविबुक्कदिमोरकमग्नस्स। १३। णाणं। १४। सोदेवोजोअच्चं। धम्मं कामंसुदे

१५

५१। एणं च। सो दे इ ऊ र स अ षि ड। अ षो ध म्मो य प व ज्ञा ॥ २४ ॥ ध म्मो द या वि सु धो ॥ प व ज्ञा स ष सं ग
 प रि व त्ता दि वो व व ग य मो हो। उ द य क रो त व जी वा णं ॥ २५ ॥ दे वं ॥ णा व य सं म त्त वि सु धे ॥ पं
 चें द्रिय सं ज दे णि रा वे र को। ए दा पं च म्म णी ति च्चे। दि र का सि र का सु ण्हा णे ण ॥ २६ ॥ ऊं णि म्म लं सु ध
 मं। स म्म त्तं सं ऊ मं त वं णा णं। तं ति च्छं ङ्गि ण म म्मो। द वे इ ऊ दि सं ति ता वे णा ॥ २७ ॥ ति च्छं। ए ॥ ण मे व
 व णे हि य सं। द षे ना वे य स गु ण प ज्ञा या। व उ णा य दि स प दि मो। ना वा ना वं ति च्छ र दं तं ॥ २८ ॥ दं स

पाठ ७
दशवैकालिक

नारिवाकृत्रलंकियं तरकरंपिवदृणं दिठिपठिसमाहरेपपहृत्यपाय
पकिष्ठिलं कसनासविगपियं अविवाससयंनारिं बंसयारिविवजाएध
वित्तसाइवि संसगि पणीअरस्तोयणं नरस्तगवेसिस्त विसंताल
नरुडहापु अंगपखंगसंठारं चारुह्नवियपेदियं इत्यीलंतननिज्जाए
कामरागविवदृणं पविमएकमराकसे येमंनान्निनिवेशे अणिच्छंते सिं

४४

विष्णुय परिणसंभुगालाणयं पृथुगालाणपरिणामं तेस्मिन्तद्वाजदातदा
 विष्णुयतएहोविदरे सीईसुएणअप्यणदणेजाविवाणनिरकंतो परियाय
 घाणसुत्तसं तमेवअणपानिजा गुणेआअरियसमएधतवचिमसंझमंझोग
 यव सज्जायजोगवसयाअदिदिए स्तरेवसेणाएसममतमान्दे अलमप्यणोहो
 इअलेपरेसिंद्सज्जायसज्जाणरयस्मताइणो अप्पावजावास्सतवेरयस्स वि

कड्फ ईडंसि मलेपुरेकम समीरियरुप्यमलेवडोइणो द्रसेतारिसेडुक्कसहेडिइदि
 ए क्कणकुत्तेअममेअकिचणे विरायईकमघणमिअवगए कसिएइपुरावगमे
 ववेदिमे तिवेमिइध आयारपणिहिअज्जयणसुम्मत्तण॥ एसावको दावमयप्पमा
 या गुरुसगासेविणयनसिरेके सोचेवउत्तस्स अत्तइजावो फलेवकीअस्सवहाय
 दोइइकेयाविमदितिगुरुवइक्का महरेइमेअप्पक्कएत्तिनच्चा हीजेतिमिअपणिव

४५

क्रमाणा करैति-आसायणतेग्रुणशपगईमंदाविन्नवंतिणगे महरावियडेसु
 यबुद्धोववेया आयारमंतागुणसुद्धिअप्या इहिनियासिहिरिवनासकजा ३डे
 याविनागमहरतिनवा आसायणसेअहियायहोइ एवायरियपिइहिनयतो निय
 बइडाइपहरवुमंतेध आसीविसोवाविपरसुरुधो किंजीवनासानुपरखकजा आ
 यरियपायापुणअप्यसुना अबोहियासायणनत्सिमुखापडोपावगइलियमवक

कुम्भापुत्तचरियं

॥र्षण॥ नत्वासेरविश्वरूपं जफत्रयप्रदीपकं रूमपित्र चरित्रस्य स्त्रिबुकाद्यंतिमोमपरं ॥ तिमहवीर चतुनपुत्तिसं
 नचिनुणकहेवा क्वमाणमहे स्वामिकेहवति असु कमकमलैकणे चरणक निककमा
 नमस्कारकरिने महावीरप्रते रिदसुरिदपणयकं असुरनाइइनपणह मजिनेजे धरिनेकधतना

॥र्षण॥ नमिकण वद्धमाणं असुरिदसुरिदपणयकमकमलै कुम्भापुत्त

कडंबु = अहंकरेकुमाणिकगणितै १ रायगिहिकणे वेकेहवुंवेकून वनीरानयहनगरकेत
 रायगुणगार मी अइनगरके पुरिसवरे नयरेहापत्तसयल

चरितं बुद्धामि अहं समासेणं ॥ १ ॥ रायगिहिके वरुनयरे नयरेहापत्तसयल

गुंशो ज्जतीकनुमर तेराजयहनेपरिस तेवन्केहवेयु समोसठोके वद्धमाणजिणोकणे देवतांस
 विप्रधानवत् रेउणसिजाके एणनिजरेकेण समोसस्थाते अमहावीर

जपुरिसवरे गुणसिलए गुणनिलए समोसठो वद्धमाणजिणो ॥ २ ॥ दिवेदि स

मोसरणमीरच तेसमोसरणकेइवुंवेघणापापकमनुंविना ववितेसमोसरणकेहवुंवेमगवान रुपानो
 नाकरी कारकेवे धमेपिदेअवाणुखानेकवेमो पाश्विअइअरवनेवेतइथोवा धमठए

मोसरणो विहितं ब्रह्मणवकम्मउसरणं मणिकणयरेवत्तसारं प्याक

इनाअकरवाजेकेटते तेसमोसरणनेविषेअ तेनगवतकेहवाजेसवणनीपरिदेदीपम तेनगवतए
 इनीकोतिइइथेतनुसी महावीरस्वामिवेवावे नवेशरीरजेहवुंसमुद्रनी परेमीनरवइ मशीनितए

रपरिकुरियं ॥ ३ ॥ तच्च निविद्धोवीरो कणायससिरोसमुद्गानीरो वाणाइव

चउः प्रकरकं परमत्रत्यतत्राज्ञाकरकध ४ दानशीलमपत्रवनाजरुण त्रैकरी चारप्रकारे धर्म
मोपदेशदेवै

नय्यप्यारं कहेइधम्मं परमरमी ॥३॥ दायांसीनतवभावाण नेएहि चनुविहो
बई तेदानादीसर्वधर्मसुधेमु तेनावनोमोटीप्रभावमहिमाठे ५ तेदेकरी चारप्रकारे धर्मठे
रव्यपणे नान जाइवो ते नवविके एवेठिं ससौरस
मुद्रतवने

हवइधम्मो सवेसुतेसुनावो महप्यनावो मुणेअवो ॥५॥ नावो नवुदहितर
नोका वलीति नानकेरवावेसगजिदेवलोकअनेअप बलीमावधमकेहवोबेअवप्राप्तिनि मंत्रचित्पत्र
उच्यते काजिमोक्षनिहांजवनेपगथलिंबई मनोनीवितसरुपामवानइ

णि नावो सगापवगपुरसराणी नविआणी मराचिंतिअ अचितवि
द्वितीयचिंतामणीरल ६ तेनावनेधरतोयकोश्री पासुंतेअधसम्पत्क चारिवलीधविनाचारि ग
स्रषोबइ रुमाडिकरजकुमार तत्त्वतेजेणइ वरहितपणे स्वा

तामराणी नावो ॥६॥ नावेएकमपुतो अवगततोअगहिआचरितो गि
सेरदो यकोइपणिवल्ल सर्वलोकालोकविकारकके ७ ऐप्रकारेअगीर्वतनामुखधीसांननिमुकोठे
ल वन्ना नपाम्यो गहस्रवासनेजेणहवगोनमस्वामीज्जिल्या

हवसेविवसीतो संपत्तेकेवलं नाणं ॥७॥ इच्छतरेइद नइनामं अणगारे

नगवानश्रीमहावीरस्वामीप्रतित्रयणवार आदरेकरिने संवनेआवने करीनई आस्कारक
मनशुद्धे प्रवक्षणकरे

नगर्वमहावीरतिरकुशो अर्याहिरिणपयहिएणं करेइकरिता वंदइमे
रेवांइइं विसेषेवादिनिम एअकरेपुठतात्वा संपुबुतेकहइबइ हेचगवनकुए किमते
स्कारकरिने कर्मत्रिनबइ स्मडिने

सइर्वदिता नमीसिता एवंवयासी नगर्वकोनामकमाप्रतो कर्हव
गहवसिरस्यायकाजअनित्या दिनावता यकाज अनंतबिक एबुबीजुर कठकटप

तेएगिहवासिवसेतेए नवर्ण नवर्तेणो अणितं अणुत्तरं निवाधा
भावतां लोकप्रकाश हि विताहवु

कमदिआवर समयवस्तुचि एलिमनाचं एहबुवरप्रधानकेवलज्ञानविशेषोपयोगस्वबीजुप्रधानके
एरहित शवक इनीपरेसंघर्ष वनंइनिशामान्योपयोगरूपषेदाकस्यां

यं निरावरणी कसिएणं पमिष्ठुर्न केवलवरनारादसणं समुषामिअ
एगोतमनाप्रह्ववेअनेतर अमणतस्वीश्रीमहावीर एकये जगोनप्रमाणविस्तरेने सुधाअमृतसररवी
स्वमीजेने हनीएदुबनिवनी

तएणं समणे नगर्वमहावीरे जेवएणमा मिएणं सुधसमाणीए

वाणीइंकरे कहेवाहवा हेगोममनेउंमुऊनैसुखई
ने

बुद्धंवेवंहेगौतम कमा
सुत्रंवेवंदित्र आश्वर्यका

वाणीए वागरेइ गोयमजंमेपुहंसि कमापुत्रस चरिप्रब
ए एकयमनेयइइं प्ररथंमनेसमापिपयंतिसीनली ए तेचरिप्रब
रप्रमुकहेवे

रिवं एगगामणेहोउ समगामवितंनिसामेसु॥७॥तथाही॥जं
मेवनामाइं सरतनामाकेत्र नामध्वनागने डुगमपुरनामंनगर छे तेनगर
पनेविडे विडे

बुद्धविदेवे नरहस्वित्तस मप्रयारमि डगामपुरा निहाणी जग
मर्वनगरमांश्रेष्ठ तेहंज्ञेएनामंराजा तेराजाकेहबोछे प्रतापजस्तीहंका
नगर छे राज्यकरेछे रानेजायेछे

पहाणीपुरंअच्छि॥२॥तब्वयदोएनरिदोपपयाचलच्छिइ निज्जिअ
मृयतेजेतैं निजे शबुहंरहित निःकंटकंराज्यनैपाल छई तेजे
एमा

दिणीदो निज्जिअरिअसावऊं पालइमिईंटयंरऊं॥१०॥त

र

पाठ ९
कुम्भापुत्तचरियं

१२ तेकीसुप्यीनामुस्वथीएहबोवरां एहीअप्रमुखीदेनीघण्टुहृदयधरं पवेय
तलांअजीअहसुपीकज्याएकारीवे नृणी
सुरवतेजेहनु मम

॥१॥तंनिसुणिअनहसुही नहसुहीनामजरकिणीहिहा मा

वतीलुंरुपकीस्त्रि नगरमांकिहंकररहेवे विहीपोहाती २० घणबालकनेंउबालवाल
एवइरुवधरांकमरसमीवेमिसंपत्ता॥२०॥दृष्टएतंकमार

हने एहवोराज्जुमरनेजाइरइ तेवहाणीहसंकिमरप्रतीवे तेउमरअमी
बज्जकमरुचालणिकृतद्विबं साजेपइहसि कए, किमिमेए

रेवेसुंएकांइरिही २१ जोरुदापिताहरंविक्कनेक प्रकारनांकेउक्कनेनिषईचपलहो
वंकरमणेणं॥२१॥जइताववइचिर्तं विचित्तचिर्तंमिचंचलं

यते मुज्जबवादिदीकिआवि तेऊमारएवचनसंजनीदीवेह्नासफेरिनी २२

हेइ तामसंअणुधवसु दयएमिणंसुणियसोऊमरो॥२२॥

५

तेकन्याद्विदोऽप्यो

तेकन्यानेआणवारुपकौउककलुबैचिततेजेहनुएह्वो

ऊमरपब्बा
मेबेबेवीत्रा

तंकनंअणुधावइ तन्मयएकउहलकलिअचित्तो तपुर

गलबइ संकरतांदेवीऊमरनेयोतानवनमां २३ घणाशालनाइदघणवकनवइहते
लेइगइ हनेहेवल

नंधावति साविऊतंनियवर्णनेइ॥२३॥बऊसालवमसुअहो

पातलमागेकिरीनइपातलमांलेइगइतिहा सुवणमियघटितेअतीवम मेहरदीवरन्नाइ
ऊमरई

पहेणपायालमसुमाणीन सोपासइकणयमयी सुरनवणम

सियुऊदेवकुनइ २४ नेधुवनकेतुंबे पदरागादिरलमयबेस्तन प्रनासइहेउधो
तकहेबर पंक्तिजिहां

इवरमणीयं॥२४॥तंचकेरिसंरघणमयथंनपीती कंतीनरइ

लित्तेमधजागजेहनी वलीकेहंबुबैअवन मणीमयतेरणनिपंक्तिइंकरिअतंतकां
तिपइतेकांतिइकडुरितनुवन

रिअन्नितरपरसं मणिमयतेरणधोरणि तरुणपहाकिवरा

यु

२५ वनीतेनवनकेरुंममिमय
थंननेविषेरहीपूतलीनारादेने

करा हविनआनेमयीकस्या
छेननससुराय

कठुरिअं॥२५॥मणिमयथंनअहिडिअ पुतलिअकेलिखा

जिहां

बऊरुचनाहंविआंविआमलेंकरा शो-नता गोख्यमावीक्तिहंकरा शो
नायमानजेवुवनजणाय छे

नअजणेहं बऊनसिखित्तिचिन्निअ गवरवसंदोहकयसोहं

२५ त्रिभुवननालोकनोविभनेउध्याप्रतुंकरणहारएहवुंहेवभुयनजोहने अतिअ
बोकफेरदृष्टिदेह नई

॥२६॥एअमवलोइऊणं सुसुवणचुवणचित्तवुद्यकरं अइ

अर्थपाम्मेअतो ऊमरएअकादेवितक्यालागो २० सुइअजालदेइअ अथव

विमूवमावन्नो ऊमरोइअचिन्निंतगो॥२७॥किइदेजालमेअं

उंयसांखनदेइछे अथवा माहरीनगरीथका एहजवनमांके

सुमिणंसुसणीमिदासइएइअ अहयंनिअनयरीवं इहनवणे

इ

२७ प्रकारे पवतवांपयो व्यक्त कर्मने कोमलसद्यनेचिषि बेसामी

केण आणीनि ॥ २७ ॥ इत्थं सदेहा कलिअं कर्मरं विनिवेशि कणपहनेके
यंतरी अमरप्रतो बोलीमि हे स्वाकं चरनी सिबु ऊककते २२ अजिमाहरो आजमे
न नुसां नल मोतो जाये

विन्मवद्वं तरवज सामि अवचणं निसामिसु ॥ २८ ॥ अथ मए अथ म
वजदिवसे स्वामी दीगे घणुं आणं दुपने ते माटे मइ ऊफने पुष्यादीके अत्यंत सुगे धिगेव
न मध्यमागजि

रा चिरेण कालेण नाहदिठोसि सुरनिवणे सुरनुवणे नि अकजे
होएह वाम्बधमने वि ३० आजनी चैमाहरमननामने सपकेर न्यपादपजे कल्पवृक्षफले
पेला वीरु रथे

आणि सिद्धमं ॥ २९ ॥ अथ चि अमसुमणे मणे रहो कपपायवो
तोयथा वे जेदनादी करुम सुके तादि आज हे स्वामी खंडुफने मजे नय ३१ ए प्रकारे
कना अनुजावथी यथु वचनस

फलितुं जसुकसुकयवसठ अथ उमं मज्ञमि कित्तिसि ॥ ३० ॥ इत्थं

पाठ १०
कुम्भापुत्रचरियं

प्रकस्योत्तदुर्गत ३५ कुमरनी पूर्वम्वनी एते लज्जारहीतनिःशंकपण्डस्वेबाइ विषयसुभ
वीसृविमाटे प्रतेनोग

रीतस्मरीरंमि॥३५॥प्रवृत्तमर्त्तरन्नजा लज्जाइ विस्तुत्तुंजएनोए एवैक्सि
वृवविन्दुक्त वांसतांवेजणांनवननेविषेरहनि ३६ कोइकहस्येजेदेवीनिअनेमनुष्यनेनो

यसू हाइ इन्नि विविनसेतितव्वविआ॥३६॥ चउ विधनोगस्वरुपंस्थानी
किमतेक चारबेकाणेनोगसंबंधकह्योबेतेकएकहीसंघातइ तेस्वामि देवताजेतेएक
हेबे देवीसंघातेनो

गेषुक्तं चउहिवाणे हिवाणे हिदेवाणिसंवासपन्नते॥तेजहाःदिवेनामंएगे
मकरे एप्रथम नोगनो नैद १ देवताजेतेमनुष्याणीसंघातेनो गकरे एबीजो नोग
नोमेइ २

दिवीएसदिसंवासंमागबिजा १ देवेनामंएगेव्वीएसदिसंवासंमागबिजा २
मनुष्यजेतेदेवीसायैसेनोगकरे एबीजो नोगनो नैद जाए ३ मनुष्यजेतेमनुष्याणीसयि नोग
को संकासकरे एचैथो नोग नैद
जा एवा ४

व्वीएनामंएगेदेवीएसदिसंवासंमागबिजा ३ व्वीएनामंएगेव्वीएस

ऊमरुदेनीनेत्रीजोत्रोगेत्रोगे नेकरेबैंकमरनीमातापीतापुत्रनेवियोगिनित्ये अत्यंतकः ख
यायुतेल्लकककके एतलाथ पीहितथबंसत्तं चारेदिसीसेवकं

दिसीवासैमागविजाध। इत्तत्र अहतस्स अमापिअरे उत्रवियोगेण्ड।

पासेसुद्धिकारीवीपी एकोइदिसेपरदिसे किंचिन्मात्रउद्धियाम्यांनही ३५ देवताइजेव

स्वियान्निच्चं सच्चविसेहेतिअ लहंतिनहिसुद्धिमत्रंपि॥३६॥ देवहिअ

रिणकारी हेयतेअपरमनुष्यमन्यसवयकीमपा मनुष्यनीराक्तिमांअनेदेवतानीराक्ति

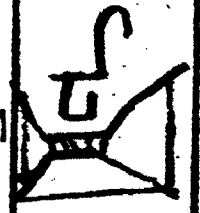
वहरिये इअरनरेहिपाविबएकहचु उएनराणसुराणं सतीएअत

हुंअंतरब्दं ३७ अथनामणतनायकेअ केवलीअगवननेषुब्बुं सुपुब्बुं हेन

रैयुरुअ॥३८॥ अहतेहिडस्किएहि अमापिअरेहिकेवलीपुठो अय

नेहस्वामीन् अमुरोडलनचकीऊमर ३२ तेराजाराणीत्तुंचचनसां अगवां

वीकहेहअम् सोपुतोअबिकअगन॥३९॥ तोकेवलीपर्यपइसिणेहस



हे जइक कानेंसंनलिसावधनमनरारवउमारोते नीदेवीहरीगइठेइमकेवली धुणे केवलीनेवच
 उल्लन्नकमनेवीतरनिकाय इंकइफु नैकरीगइरा
 वणेहिंसावहाणमणे उमाणंसेउतो अवरिजुवतरिएआ॥धणे॥तेकेवलि
 जाल्याराणी वेआश्चर्यपापोंघेनेविषइ विस्म केहेवाइवाहेस्वामीरह मल्लेयादिके
 एवेअती याकलथया तइतिरवेदे तेदेवता अपवित्रनरनेकि
 व्यणेणी अइवअवरिअविमिआजाया सहं तिकहैदेवा अपवित्रनरंअ
 मनेइगया धु जेकारणमठेंसिद्धा चारशेंअथवापांचसेयोजनपचंति उचोआकाशेम
 तमांकइगुंवे अकाशेनुष्यलोकनेछुर्गंधजाववे तइ
 वहरंति॥ध२॥स्युडकमीगमे॥चत्तारिपंचजोवण सयाइगधेअमणुअलो
 गंधिदेवाता देवीचोनेइसह देवतादेवीयो आमनुष्यलो धु एहुरुक इंतारे केवल
 वईमारई कमीआवतानथा ज्ञानीबोलताहवा
 गस्स जुहैवचइजेणी नऊदेवतिण आवृति॥ध२॥ तनुकेवलिनाइअणि
 पंचकल्पणक चवन१जन्मरदि तनांहोयतिवातामत्यलोकेंआवे बलीमहर्षि
 दाउकेवलुधुविणिपाएअरिहं तपनेमहिमाईअविंचलीजमांतरनास्मेहथका
 यी पंचसुजिणक्ताणेसुचेव महरिसितवाणुजावाण जर्मतरणेहिण्य

देवतामत्पत्निके आवें अ ४३ एखुराजखुं वचनसंजानीनेके तेदेवीजन्मांतरनास्नेहय
 सुयवेरपोषवापीणआ वानजानीकहेताहवा कीकूमरनेनेइगइइ
 आगर्बतिसुराइहय ॥४३॥ तोकेवलिनिकाहियेतीसे जर्मतरसिएहाइ ते
 राजराणिकहेताहवांहे विपाकतेमहाबजिनुंवे अति ४४ हेअयवीनकिंवारेरने
 स्वामिन कर्मनो उखदाधिबई सीगमथस्ये
 वितित्तुनेसा मित्र अइबलिनुकम्मपरिणामो ॥४४॥ अयवेकयाविहो
 अमारोतयाकुमकीमनिश्वेमादिम लीअगन्वात्तयासं जिनारेविहारकरतक
 फस्यंतेकरो हेवेकेव गमजेमत्तवुंतेथस्ये स्तारेमत्तस्येपावो अ-
 हि अमाणीकुमारसंगमोकहवी तेएकताहो विपुण जयेइहवमागमिसा
 सुती ४५ इमकेबलीनामु स्वयनी कमरनांमातपिता संसारसंबंध अधिरजा लघुउर
 वा सांजनीने एविरोगपपाप्मासता नुराज्य
 मो ॥४५॥ इयसंबंधंस्त्रिणुं संविगाकुमरमाअपिअपिअरोअ लेहूउ
 विषंस्थापुकरी तेकेवनीजानीपास्येसुरवाउ ४६ इखेपालीसकेएहवांचारि कु
 नेसर्व सुपनि अवहेउएहवुचुरिन्ननेताहवी अअनेतपप्रतेकरतीहवीराज
 ततेविअरजे तवतिरचर एमावन्मा ॥४६॥ उकरतवचरणपरा परा

होइही
आवी-

ए

पाठ ११
उत्तराध्ययन

क० च० वर्गनिर्देश	वि० वि० वर्गसूत्र	ए० ए० नलोच्चारण	ए० ए० नलोच्चारण	पु० पु० मि० पृष्ठमग	पु० पु० मि० पृष्ठमग	पु० पु० मि० पृष्ठमग	पु० पु० मि० पृष्ठमग
<p>गं चरत्ताणं विद्वंजइस्यशे एवं सीलं चरत्ताणं दुस्सीले रमइमिप॥५॥ सुणि</p>							
जा० दृष्टान्त	स० स्यरतो	त्र० त्रै	वि० विनयने	दृ० दृष्टापे	इ० इति	हि० हिम	अ० अय
नस	तमनुष्य	वोदृष्टो	तसो	नली	नई	अ० पो	नस
<p>याजावसाणस्मा स्यरस्मनरस्सयः॥ निगाए हवे ज्ञाप्याणां इवतो हियमय्य</p>							
६	अ० अविनय	नो	षट्पद्या	त० ते	सी० सी	नलो	अ० अ
जा० जा	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि
<p>गो॥ द्वा॥ तम्हा विगायमेसे क्रुत्वा सीलं पमिलने क्रुत्वा बुधयुत्तनियागदी प्रनिकि</p>							
क० क	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि
दृ० दृ	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि
<p>सिद्धस्का क्रुत्वा॥१॥ निस्संते सिया मुहरी बुधाणं अंति ए सया अहं चरत्ताणि सि</p>							
ए० ए	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि
वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि	वि० वि
<p>सिद्धत्वा निरहाणो वक्रत्वा ग अणसा सि उत क्रुत्वा अंति से वे क्रुत्वा पं गि</p>							

पु० वाचक तथा पासछादिहं स० हा० लघ्या की० की० शरमरो ए० मा० रवेचं० क्रोधादिकनेवसे। व० घएर० मा० रवे। अ० बोलइं
 संपाते। सं० सार्गपरिचम थेलने। व० वर्जइं अलि० ह०। कासी० नोलइं

खुहे हिंसहसंमयिं। हासंकीमंचवज्जा।। १०।। मायचंमालियं कामी। वक्रयं माय अलवे।।

का० प्रथमपोरसी प्रमुवइं। अ० हि० न० तिवारपही। अ० भा० १० अ० कश्चित्। चं० क्रोधनइं वसइं ननि० नगोपवइं गुरु
 मिघांतनणीनइं भर्मभांकारिकभावंइं। ए० ए० अ० ऊ०। क० वीनीनइं अ० गलि। क० कीवारे
 कले। रामाद्वेषरहित

कालेण्यत्रदिक्किता। तत्रकाण्णराउं।। १०।। आह्वचंमालियं कद्युननि एहवेइइं।

पि० लाजत्रमा क० की० धनिं। क० की० अ० आ० की० चमइं। इमक १० प्रा० रवे। ग० गलि। अ० अ० विनी वच
 दि० काराणइं धउं। अ० कइइं हे। नो० मइं नकी० वउं ता। अ० धो० का० प्र० इ० क० तज्जाण
 रूप

कथाइवि। कर्मकमेतिनामिज्ज। अकर्मलोकमिन्निय।। ११।। प्रागलियसेवकसं। वय

न० आ० दे० समि० वा० इइं। पु० क० तज्जाणो। दे० दे० विनां। मा० जाति तेशि० गुरुना० अ० वे० ए० जारा० निं १२ अ० गुरुना० वचननो० अ० ए० करण० हार।
 नलावली वेत० यो० डि० म० अ० म० वर० नो० म० नइं गुह्ये० जा० वे० वि० च० रइं। पा० अ० अ० प्र० पू० ल० अ० नि० पु० ए० जो० वा० कु० न० न० अ०
 इतिम० चाले० जि० म० ज० न० क० न० यो० = अ० नु० यं० न०। प० स० वी० धा० वर्जइं चार० नो० ध० ए०

मिच्छेयुरोपुणो। कर्मवदकमाशो। यावगं परिचक्रा।। १२।। आणसवायूलवयाऊसी

मि० क्रो० धर० हित्त० गुरु० कुं० इ० ते० ह० न० पु० ए० वि० गुरु० स्तो० चि० र्त० क० ते०। न० प्रा० घु० र० वि० प्रमा० प्र० शं० करे० ते०। ते० वि० ती० त० शि० ष्य। १३
 चं० को० धी० पु० न० रं०। सी० कु० शि० ष्य ले० वर० हित्त० कर्म० नो० करे० ए० हार। ए० नो० गुरु० क० वली। पु० अ० ति० क्रो० धी० गुरु० न० इ० पि० ए०
 इ० कर० स० हित्त

ला० मिउं पिचं हंप करं ति सीसाः चिनाणुयालकुरकोववेयाः पसाय एते कुरासयं पि।। १३।।

मोचसवासे
 भवेचालेनि
 मदिनी = १

६

वीवालीनेपुणिनव षा०या०पा०ला०वापसादीनें न० इमतरदे गु०गुरुनें २९ आ० आर्चोदिक ३० वा० अथ तु० आणवो
 शमें स० साक यणिनचइसशांवा०अथवा क्षीयइ ना० चोलायोथको लोनरहे।

पिमंवसंज्ञण॥ पाएयशरिएववि॥ अचिधेगुरूगंतिए॥ १९॥ आयशिएहिंवास्ति॥ तुमिणी

क० कदाचिरोगादि ष० प्रशादकीभोचुत्तपरि। दे० ३० इमदे। गु० गुरुनेसमी २० आ० गुरुने एकवारवोलाओ ना० न०
 क० अत्रवस्त्रांशुपिए इमजेणे। नि० मोदार्थीथको पे। स० सदाकाल अथवा। ल० बारवारवोलाओ

उत्रकयाश्वि। पमायषेहीनियामधी। उवचिधेगुरूसया॥ २०॥ आलवंतेलवंतेवा॥ न

वस्तीनरहे। क० कदाचीया च० सूकीने। आ० आसनधीरो ज० जेकांइगुरुआदेसदीइते। २। आ० पोताइनें आमणेवइ
 मानादिवाकलथको उदिवंत जु० आदरपरथको। प० करइ ठोना। पु० नपठेगुनइसजा

निमीज्जकयाश्वि। चक्रणआसांधीरो। जउजुत्तंयमिस्सुणे॥ २१॥ आसाणमउत्तयु

दिकाइ नै० मंथारेवशोतप्रवे। क० कदाचि आ० गुरुनेसमीयइआवीनें पु० प्रहेमत्तादिकाप० २२ ए० एणीप
 एक वेहअतयएइपिए उ० क० ऊकठथकउ वलयजीनें रे। वि० वि

छिज्जा। निवसेज्जाउकयाश्वि। आगमुकमुउसंतो। पुविजायंजलउमो॥ २२॥ एवंवि

नमसहितसाधुनइ मु० सूत्राअर्थ० अर्थीत० तेवि पु० सूत्रार्थप्रबताथका। सी० वा० सूत्रार्थकहे। ज० जिमगुरुस २३ बला
 रुइसूत्रार्थ विनातशिष्वाइन मिमे। क० सांभलोहुंतेतिम बीना

एयजुत्तस्सा। सुत्तंअठंचतुजयां। पुछमाणसमीसरसावागरेऊजहाकयं॥ २३॥ मु

११

नशिषनेवचनेदिनमकहेके। ननिष्कयकारीजावा।२० मा०जावानादो०दोष।५० मा०माया।चक्राष्टकीक्रोधा २४ न० नबोले।
 सु०मृदाजावा।५० पर्जन्येति०सा नजोइ परिहरइ रि।वे०वर्जइ।स०सदाइ

संपरिहरेत्रिरक। नयउहारिणिंवाए। नासादोसंपरिहरे। मायंचवजोएसया।।२४।।तलवे
 पु०प्रबोधको।सा० न०निरर्थकप्रयोजनविनानदो ३०क्रापाणात्रायानेअर्थेबा० ३०दिनात्रर्थविनानिरर्थक २५ स०लो
 सावय ले।नम०परजावनोमर्मनको अथवा।प०परक्रा।सा०ने।अर्थे अनेपरनोमर्मनकोलइ हारअ

जपुतोसावजो।ननिरठंतममया।अप्यएहापरदावा।अनयसंतरेणवा।।२५।।सम
 मयनीशालानेविषे सं०विधरविचेनेअंतकंइइते ए०एकलोसाफ।एणि०एक नेव०नरहेतनो।नम० २६ जं०जा।
 अ०सूनाथरनेविषइ सधितेविषे।अ०गजमार्गनइविषे लाक्री।स०संघातइ बोलाइनही मे०मुइ

रेकअगारेक।संधीसुयमहापहे।एगोएगिठिएसधिनैवविधेनसंलवे।।२६।।जंमे
 ने।नु०गुत्त्राए०जा सा०सकेसलवचनेकरी।व०अथ म०माहरेलअनेअर्थेइसैबे। ५०आदरपरमको।पनि० ३७
 नादिअचासभाइ ना।फ०कठिनवचनेकरी पे०एस्वीनुम्दिइकरी गुहनीसीषप्रमाणकरइ

वुधाएसासंनि।सीएएकरुसेएवा।ममलानोतिपेहाए।पयउत्तंपहिस्फरो।।२७
 अ०गुहनीसीष।मो०मुकुमार ५०प्रकोकाइएअचसांपत्तीको० हि०हितकारि।तं०तेगुहनी वे०देष।हो०थायइ।असा०अ २८
 सयाकविनजाणनेउपामेकरी नेहनेसाषतांरेवोतो।चो०प्रेरवउ सीष।म।मने।ए०प्रसायंत साफअविनीमूर्धमसीषरेता

अणसासणमोवायं।उकमसयचोयणं।हिवंतंमन्नइपनो।वेसंहोइअसाकुरो।२

ॐ इन्द्राणां त्रींशत्संज्ञाः स० अमणतपसी अगचंतज्ञानवंत मन्त्रीमहावीर स० कण्वयोगब्रह्मप० प्रकर्म जे० जे० सा० भ० परी स० ता० पु
 ॐ नेवाचीसपरिसह देवदं केवलज्ञानकरी रूप रूपमपि सो० का० ज्ञाने
 मेव सा० ज्ञाना

सुतेवावीसंपरीसहाः समलोणः जगद्व्याः महावीरिणां कासवेणपवेश्या जेनिसूः सोचा

न० ज्ञानि श्री० जे० परीस सि० गो० बरीन शिवै प० हिमतां फिस्तां उ० परीसहं फरसुंति चारं नो० ते० तेनाजसपरी दि० च० प० स० र्क० ज्ञाने
 च० हिन० ज्ञानम० संयमने विवशेनही महाजिमतेतिम सहेने प्रसतोपरासह
 नहं ५

नबाः अत्रिभूयः त्रिकायस्थियाण परिचयंतोः युजेनो विहनेजाः तजहाः दिगांवापरीसहे

पि० त्रुषानो परीसहसर्व स० णानपरीसहसर्व उ० ज्ञानोपरिसह रं० नामससाहिकरीकधीपी अ० कांठामात्रोपेतवस्र न० स
 प्रकारेसहेसाकसचिदपा प्रकारेसहे ३ सर्वप्रकारेसहेवो ४ ज्ञानोसर्वप्रकारेसहिवउ ५ तत्रात्रत्यमलवकनोध धमने
 एतनपावे २ रिनेतेपरिसह ६ विषेज

पिवासापरिसहेः सीयपरीसहेः उमिणपरिसहेः दंसमसयपरीसहेः अचेतपरिसहेः अ

धीरपणोनांनवा ५ संयमने विषेप्रकर्त च० आमादिकशिवर वि० मसातादिस्त्राभ्रमिने सि० उषाप्रयसमेजायेर अ० अमनवच
 तेअसीपसिह ७ तास्त्रीनेअगावांठने गेतेचरियापरिसह ८ विषेजमणानेहनेवस्सीर हिवेतेशयापरिसह ९ नसांजलीनेह
 हिवोनिमाहियापरिसह १० नाकरबतिजा

रशपरीसहेः इस्थीपरीसहेः चरियापरिसहेः तिसीस्थियापरीसहेः सिज्जाघरीसहेः अकोयप

कोशप व० वधताभातकर जा० सिधांतोअदिशिया अ० सांगीवस्तुजाअप्राप्ति रो० केटप्रमुषनेतेगे त० तणादिस्नेकरिमेंअधिकार
 रिसह १२ ताहमाकरनीवेव चेनाकरतालाजवोनहति विरनकरवोनेअलान सभद्यवेद्यपकीगण ल्पारिकतराधेनेतणानाकर
 धपरिसह १३ यचत्रापरीसहसहिवउ १४ परिसह १५ अकरावेनेगेणपरिसह १६ सनोपरिसह १७

रीसहेः वाहपरीसहेः जायणापरीसहेः अलानपरिसहेः रोमापरीसहेः तणाफासपरीसहेः ज

ज० म० श्लो० प० म० व० आदि० क० त्र० अ० म० व० इ० पु० अ० श्री० य० य० न० य० उ० क० र्ज० प० ग० ॐ त० व० तं० अ० र्ज० ण० य० र्ज० क० री० वि० दं० स० म० स० य० नि० जे० लें० ते० प० प० श्री०
 री० स० स० व० ५ व० श० यी० व० क० री० र्ज० वि० दि० न० क० र् १९ न० क० र् प्र० न० य० सि० ह० २० ष० वा० द० न० क० र् ते० अ० र्ज० न० प० सि० ह० २१ दं० स० ण० प० रि० स० ह० २२ स० ह० न०

सपरिसहसकारपुकारपरीसहेः पनापरीसहेः अनापरीसहेः दंसापरीसहेः परी
 बीसतो स्वरूप० प्र० क० ना० का० ष० प० गो० त्री० महान० तं० ने० त्रि० उ० म० प्र० ते० उ० न० हि० स्यु० ण० सु० आ० अ० उ० क० मे० वा० नी० स० प० रि० स० हा० १ दि० नू
 षि० न० अ० स० व० रू० प० ण० इ० र० दे० व० इ० प० प० री० स० ह० प्र० ह० षा० ध० मी० खा० सी० इ० जे० व० प्र० ते० सु० सं० अ० लि० मे० मु० ज० न० क० ह० ला० २ प० ए०
 जा० षे

सखाणपवित्रनीः कासवेणंपवेश्यातंनेउदाहरिस्सामिः आणुयुबिकरोहमेः॥१॥ दि
 थं० रे० श० वे० ने० वि० धे० स० ग० ला० त० न० त० प० न० त० त्रि० सा० भू० य० न० सं० न० छि० फू० ला० रि० क० न० डे० ह० स्व० य० मे० व० न० प० अ० न० दि० म० च० न० ही० २ सा० न० प०
 परि० स० ह० म० हि० नू० ष० नो० परि० स० ह० य० म० ने० वि० च० इ० व० ल० व० त्ते० न० वि० अ० ने० र० प० से० न० डे० हा० वे० फ० ला० स० य० मे० व० न० प० वा० अ० वे० र० षा० ना० वि० प० ज० थ०
 स० हि० ने० दो० हि० त्ते० ने० मा० टे० नू० ष० नो० = दि० क० ने० प० वा० वे० न० ही० अ० ने० सा० थ० नी०

परिसहस्रहिलो
 कसो =

गिष्ठापरिगएदेहेतवेसीनिसूथामवांनछिदेनछिदावएनपानपयावाः॥२॥ काली
 स० धि० दा० च० ण० प्र० सु० रा० कि० सा० भू० नो० इ० व० लो० श० शी० र० थ० म० अ० ह० र० नि० म० त्र० नो० ज्ञा० ण० आ० अ० अ० ण० प० मे० अ० क० ल० प० ण० र० हि० ति० वि०
 स० ने० स० श० थ० न० सा० ज्ञा० वे० मा० स० ए० ह० वे० इ० व० अ० ना० रि० क० पा० पा० णी० न० उ० न० ही० न० पू० णो० न० करे० ए० ह० वो० ष० को० अ० सं०
 के० हू० इ० नो० ही० प० ण० म० म० म० र्ज० नि० वि० धे० नो० ले०

पुत्रांगसंकासे किमेधमणिमंतणमायनेअसणपाणस्साअदिणमणसीचरेः॥३॥

गा० ह० न० अ० न० म० न० स० ह० उ० म० न० य० न० य० उ० दा० म० न० य० न० य० ता० हा० सि० मि० त्र० से० व० व० से० एक० द० ते० ह० ने० ज्ञा० र्जा० ना० म० र० ण० थ० वै० रा० ग्प० क० प०
 नो० ति० व० री० ह० कि० मि० त्र० पु० त्र० स० हि० त० दी० ह्या० ली० धी० नि० र० ती० चार० म० य० म० पा० ले० एक० द० मा० क० सा० थे० वि० हा० र० क० र० ता० अ० ट० नी० इ० प० कुं० ता०
 ति० हां० ह० सि० मि० त्र० ने० कां० रो० ज्ञा० गो० ज्ञा० ति० वा० अ० म० म० र्ज० थ० मे० जे० णो० सा० धा० ने० क० लो० अ० हो० सा० धो० तु० मे० अ० धा० य० कुं० वे० कुं० इ० वे० यी०

२६

ए०रा०पर०५०प०मि०म०र० पा०जीव०प्रा०णी०क०क०र्म०वि०अ०शु०ने०क०री० न०वि०र०क०भा०वन०इ०पा०स० सं०म०ने०क०क०अ०नो०ग०मं०शा०पा०म्या०
 जो०वे०रा०जा०ध०नी०य०जो०जन० सं०सं०मार्०न०इ०वि०ष० नो०हा०प०००मि०स०त्री०रा०जा०वि०रू०क०ता०
एवमानदज्ञोणीसा॥याहिलो कम्म किच्चिमा॥ननीविज्जतिमंसारे॥सबुद्धेसुचरकलिया

वन क०क०र्म०नै०सं०सं०बंध०सं ३०इ०ध्या०य०को०य००घा०णी०वा०र ॥अ०म०नु०ध०नी०यो०नि०वि०ना०जो०००न०र०क०नि०रे ॥वि०वि०मै०ष०इ०ह०००ह०ण०ल०उ०इ०
 पा०मि० शि०ति० ॥अ०ति०ही०मु०द०मुं०प०जी०व ॥वे०स०री०र०कि०वे०द०ना०जो०ग०व०इ० ॥य०न०यं०न०म०दे०व०ता०॥रा०दे०व०ता०रां०कि०ल०व ॥सा०००प्रा०ण०अ०शु०न०क०र्म०ना०ध०णा०
 धा०दे०व०ता०दि०क्ख०ना०यो०न०इ०वि०ष०इ०

पा०कम्मसंगेहिंसंमूटा॥इ०वि०या०व०इ०वे०या०णा॥अ०प्रा०ण०सा०स०जो०णी०सु०वि०णा०ह०म०ति०पा०णि०र०णे०

क०म०नु०ध०ग०ति०न०इ०मा०घा०त ॥अ०००प०थि०मा०दि०क्ख०ना०अ०व०क०तां०र ॥जी०जा०व०यो०००अ०शु०न०क०र्म०नो ॥आ०००अ०प०पो०त०इ०कर०इ०म०० ॥७
 कारि०क०र्म०न०इ०रा०ल०इ०करि ॥अ०नु०क०म०इ०क०००००इ०द०वि०त्त०कि०ना०इ०इ०कर०इ० ॥वि०शु०ध०पा०तो०म००पा०णां०ते०जा०व ॥स०उ०द०प०तो०

इ०कम्मणंनुपहाणा॥अ०ण०पु०यु०र्ची०न्या०इ०रा०जी०वा०मो०हि०म०णु०प०ता॥अ०य०यं०ति०म०णु०स्स०यं०॥१॥

मा०००अ०नु०ध०सं०बंधी०मो०वि०उ०दा ॥स०००सां०ज०ल०वो०००च०र्म ॥जं०००जे०ध०र्म०सि००सां०अ०ली०न०इ० ॥न०००त०पा०२०ने०इ०इ०खं०००म०द०या ॥८ ॥अ००
 रि०क०स०रा०इ०ल०००पा०मा०न०इ० ॥नो०इ०इ०इ०इ०इ०इ० ॥५०००००इ०इ०इ०इ०इ०इ०

मा०णु०स्सं०वि०ग०हं०लु०धां॥सु०इ०ध०म०म०स्म०इ०ल्ल०ह०॥जं०मे०चा०प०मि०क०ं०ति॥त०व०यं०ति०म०हिं०स०यं०॥१॥

क०रा०धि०रे ॥सं०सां०ज०ल०उ०ल०ज ॥सं०००ध०र्म०ना०स०इ०ह०णा०र०प०ध०र्म ॥सि०००सां०ज०ल०न०इ०ने०००म०ध०स०हि०न ॥व०००घा०ण०ज०मो०ली०अ०मुं०ध०य०००इ०इ०घा०इ०इ०इ० ॥९
 पा०मा०न०इ० ॥नी०रू०पिं०००अ०ति०हा०इ०इ०इ०इ० ॥स०म०म०क०००००दि०मा०क०म०मि०

ह०च०स०व०णं०ल०क०ं॥स०इ०प०र०म०इ०ल्ल०ह०॥सो०चा०ने०या०उ०य०म०गं०॥व०ह०वे०प०रि०ज०व०स्स०श०णी॥

पाठ १३
उत्तराध्ययन

द्विष्टेऽप्राणीनाघातं करणं सा मायावंचपि च्युत् ३
रवाञ्चक्रानामु मृषावोद संपरं वं कु कर्त
३. जोगवृत्तोद्यकोक उपात्मं मास से अयमुक्तं मे मघारिक २
जोगवृत्तां हतुं

द्विष्टेऽप्राणीनाघातं करणं सा मायावंचपि च्युत् ३
रवाञ्चक्रानामु मृषावोद संपरं वं कु कर्त

का. मयायुं करि मर्दथ लथी नी परवेचु. वि० विविक्तधनन शं विषुं शि० गृह ३. विप्रकारद्वाग्देषु म० अ० ४ मि० अलसिउ निमम० मारी षाद् अ० न
वेचुदेकरिष्ठापणपोतना गुणकहिचद् आसक्तद् स्त्रीन श्लिषै कर्मरुपायाइलुंसे सेचरक इकथाउपरिपीणमारी वारडीतिमजी
कराम मातोम दोष इद् रकर इं कर्म नाथ इ. यण्ठे मइ करि कर्म नाथ

कायसावयु सामिन्ने विने गि द्वेय इच्छि कडु डं मलय चिणा इ सि कता गु व म दिथं

१० न० अउ कर्म वा ध्याति वारं पु. मि० शो इ या म्यौ ध के गिलेण प० अति ही वी द्ते प० क० कर्म पुं आ० देषां हा र्त कर्म से
पी नौ आ रो ग इ नी पर इ प० षे द पा म इ पर लो क था हां जो इ म इ अ० अ० आ पणा आ सा
नो सी पी क र्मी वं

गु० १०॥ तत्र पुष्टो अयं केण गिस्ताणे परि त म्य श्रय ना उ पर लो ग स्सा क म र्पु ये हि अ म्पु णे

क० सो जे लामि म० इ इ न० वर क म्पु हि = अ० श० ल० ग० हित जा व निजा जे = वा० अ० ज्ञानी नी क० क० र्क र्क म्पु ना प० अति हा म हितो ह्ला नि हा उ

११ कथा मे न र ए धाणा असी लाणं च जा ग श्रु वा ला णं क र क म्पु णां पृ ग ढा ज लु वे य णा १२

ने ति ल म क न इ वि ष इ उ क र्पु जे जे नि म उ इ ति म मे म इ इ वे क अ० ते ए इ क र्म इ क र्म नि अणी ग ति ज म सो० ते अ० वी क र क र्म न उ क र ण हा र प० म र ण
उ जे धा ग इ धे क र्म उ ग म म कं ज लुं कु इ ते म र्क अं आ रि क क र्म इ क र्म अ र्क रि = न इ म्पे त रं प० प० अ० ना पं क र इ उ

तयो व ज्ञा प्र थं द्वा णा ज द मे त म णा स क य आ हा क म्पे हि ग लुं तो सो य च्छा प रि त म्य इ १३

ज० नि म्पु ना र्के म त म० म क र्मा णा पा वा णा रि क र कि त वि० पा वा णा रि क म ति म० मा नि इ अ० करि जि० जा ग र्थ क इ जि म वे म र्के म० सो च इ
ऊ० जा ल म इ हि० अ गि ल० श० श० न० जे म र्ग जा प म इ मो० क र्प म कि क

जहा सा ग डि उ ज्जा ण म म हि च्छा म हा प ल वि स म म्पु ग मो इ त्ते अ रे च्छा मि सो य इ १४

ति न र को दि क इ त्ते पि ण सां जे ली उ र् = ३

इहाण उपजवा
नास्थानि कर्मा म
सादिकुपिथम ३

इवे वेदन
कगते १०:३
तउयको २

७८

ए० धर्मवृत्तनिपदं० च० चकारिकं अ० हिंसादिकं अ० धर्मपु० च० वा० अज्ञानी० म० मरणं अ० करिणा० इत्युक्तं जिमत्वेतुतौ च० इति
 स्याद्विषयतिथिमी० वि० वागीनं ग० कारकरीनं अ० दि० तं उ० मुखं० पु० ह० तो० य० को० म० अ० ज्ञानी० म० मरणं मुखं० पु० क० तौ० ध० क० तौ० न० इ० १५

एवं धर्मवित्तकर्मो अहमं पडिवजिया॥ वालेमचुम हंपतो॥ अखेनगोवसो य इ॥ २५॥

ता० तिकारं० इ० प० उ० इ० से० ते० रो० वा० व० ल० अ० ज्ञानि० सं० श० म० इ० का० जि० म० क० र्त्त० ज० ज्ञा० री० न० इ० क० ए० क० इ० द० व० इ० व० जि० को० ए० म० म० वा० उ० इ० क०
 गि० म० रा० अ० ज्ञ० म० इ० ध० क० इ० म० न० श० क० इ० ज्ञा० वा० ना० ज० य० धी० उ० म० अ० ज्ञा० र्त्त० जि० न० इ० म० ध० म० न० री० ध० र्ण० क० र्त्त० इ० इ० पि० ए० ह० त्वै० ति० वा० प० वा० य० वा० १६
 ता० प० कर० इ० ज्ञा० म० न० व० सं० तु० ष्प० ज० व० ह० य० न० इ० को० च० इ०

नउमेमरां तंमि॥ वालेसं स्रइजया॥ अकाममरां मरइ कत्तेवा कलियाजिए॥ २६

ए० ए० क० क० अ० अ० क० म० वा० क० पा० नि० न० त्र० यं० य० स्र० यं० इ० अ० क० अ० म० म० र० क० ह्या० प० ठी० पं० पं० मि० त्ता० क० म० इ० सु० सा० ज्ञा० लि० है
 म० र० न० ग० व० तं० इ० इ० त्ति० इ० स० स० क० म० म० र० शि० ष्प० नि० व० मु० ह० न० इ० क० ह० ता० य० क० १७ म०

एयं अकाममरां वालाणं उषवेइयां इतो सकाममरां पंमियाणं कणे हम्मो॥ २७॥ म

म० रा० ए० पि० ए० म० ज० जे० ए० म० य० कार० इ० मे० गु० र्त्त० वि० म० प्रति० इ० क० ह० इ० वि० वि० ध० म० कार० नी० ज्ञ० ज्ञा० व० ना० इ० करि० म० सं० यं० म० व० तं० उ० तु० इ० द्रा० अ० दि० १८
 उ० ए० प० व० त्र० णं० उ० इ० मु० न० क० ल्पि० इ० क० तं० इ० तं० म० र० अ० प० ए० म० क० सं० ले० ष० वा० इ० क० र० व० इ० अ० उ० ल० प० ए० र० ह्ति० वि० क० अ० ता० व० इ० प० वै० जे० ह० न० इ० ते० ता०
 शे० तु० मे० अ० व० पा० क्तु० उ० इ० इ० ति० म० नु० मे० क० र० नौ० न० मे० अ० ने० रा० श० ए० नो० त० या० अ० ला० तु० षा० त० क० नो० म० इ० ए०

नयाइ हं
 मरां = ४

रणं पिसयुजाणा॥ जहामे नमएक स्रयं विष्य मन्नमए घाया॥ संजयाणवु सीमउाइ

न० न० क० इ० इ० ए० यं० मि० तं० म० र० ए० म० न० न० क० इ० इ० ए० यं० मि० तं० म० र० ए० म० न० अ० नि० इ० वि० धि० न० स० वि० न० हि० स० री० षुं० आ० च० अ० र० अ० नी० वा० शि० क० १९
 सर्व० जि० मि० तु० न० इ० वि० ष० इ० सर्वा० ग० ह० स्र० य० न० इ० वि० ष० इ० व्र० तं० उ० इ० ग० ह० स्र० य० न० इ० र० ह्ति० वा० रि० जि० स० य० ला० सा० धु० व० स० रि० यु० म० ही०

नश्मं सवेसुसुका॥ नश्मं सवेसुगारिसु॥ नाणा सीला अगारया॥ विसमे सीलाय निक्कणे

अ० ह्वि० जे० सं० अ० अ० को० ए० इ० रु० धा० कु० वि० ग० ति० मां० दि० सं० अ० ने० री० एक० स० सर्व० अ० स्व० प० र० ह्ति० सि० ध० र्ज० दे० अनु० त० र० वि० मा० न० दे० व० ता० वा० अ० थ०
उ० श० नि० ग० ए० रु० मा० क० इ० ते० ल० इ० गति० मि० कु० इ० ग० म० म० लि० वि० कि० दे० व० ता० इ० इ० २५

अहजेसंबुमेत्रिकु। पुणहंअणयरेसिया। सबदुखपहिलोवा। देवेवाविमहिहिया। २५।

उ० अनु० त० र० वि० मा० न० दे० व० ता० अ० दे० व० ता० त० ज० व० त० इ० अ० ण० अ० नु० क० मे० पु० स० भ० र्णा० दे० व० ले० म० थ० अ० आ० वि० मा० न० ज० ज० स० व० त० दे० व० ता०
वि० अ० ल्प० वि० का० र० ना० उ० श० मा० ए० इ० नु० त० र० वि० मा० न० लि० गी० दे० व० ता० इ० इ० स० आ० ता० इ० इ० दे० व० ता० इ० क० र्मि० इ० क० सि० म० हि० त०

उत्तराश्विमोहाशुइमंताएपुवसोसमाइनांदिजखेहिं। आवासाइजसंसिलो

२६ रा० र्घ० अ० यु० षा० व० त० इ० इ० रु० स० अ० ति० लि० इ० त० प० ता० का० अ० न० व० छि० त० अ० ह्वि० ना० ना० त० का० ल० ना० क० पु० मा० इ० अ० घ० ण० म० र्श० नी० प० रि० प०
मं० त० इ० इ० वै० धि० य० रू० प० क० र्मि० वा० म० म० र्थी० इ० व० त० स्ते० दे० व० ता० सं० स० ति० थि० ने० ज० व० त० इ० इ० ० का० ति० त्रि० अ० धि० क० य०

रघदीहाउथाइमिमंता। समीकाकामरुविलो। अकुणोववन्नसंकासा। पुत्रोअविमास

जा० ते० ज० उ० ता० ने० श्र० वो० क० षा० दे० व० ता० ना० सा० मि० मे० वी० न० सं० अ० जे० रे० सं० य० सं० त्रि० सा० क० वा० अ० थ० वा० गी० ग० ह० जे० जे० सं०
न० क० जि० हा० व० इ० ति० हा० जा० इ० व० इ० नै० दे० ल० प० म० थ० वा० अ० थ० वा० उप० स० म० इ० क० रि० पु०

मयनाशु। ताणिहाणणिगच्छति। सिखितासंजमंतं। त्रिखाएवागिहउेवा। जेसंति

शी० व० ली० अ० त० क० इ० त० ते० ना० व० चि० द्वा० आ० ग० ति० इ० इ० ते० सो० षां० सं० सं० य० ता० न० जि० ग० ति० वु० र० शी० प० दि० न० न० वा० इ० सं० म० र० णं० ति० म० र० ण०
दे० व० लो० कै० जा० इ० २० अ० लो० न० सं० ध० लि० श्र० ष० ना० क० जे० ग० ति० आ० मा० न० म० प० ठ० म० जे० न० इ० ते० स्वा० आ० व० इ० थ० क० इ० स० य० ति० ना० प० न्ति० सं० म० लि० इ०

परिनिबुमा। शोतेसिकचासपुजाणा। सजयाएवुसीमथा। नसंतसंतिमरणंते।

राजस्थान में प्राकृत-अपभ्रंश पाण्डुलिपियाँ : परिचय

[राजस्थान के जैन शास्त्र-भण्डारों की ग्रन्थ सूची]

डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल

पं. अनूपचन्द न्यायतीर्थ

राजस्थान प्राचीन काल से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। इस प्रदेश के शासकों से लेकर साधारण जनों तक ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। कितने ही राजा-महाराजा स्वयं साहित्यिक थे तथा साहित्य निर्माण में रस लेते थे। उन्होंने अपने राज्यों में होने वाले कवियों एवं विद्वानों को आश्रय दिया तथा बड़ी-बड़ी पदवियाँ देकर सम्मानित किया। अपनी-अपनी राजधानियों में हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहालय स्थापित किये तथा उनकी सुरक्षा करके प्राचीन साहित्य की महत्त्वपूर्ण निधि को नष्ट होने से बचाया। यही कारण है कि आज भी राजस्थान में कितने ही स्थानों पर विशेषतः जयपुर, अलवर, बीकानेर आदि स्थानों पर राज्य के पोथीखाने मिलते हैं जिनमें महत्त्वपूर्ण साहित्य संगृहीत किया हुआ है। यह सब कार्य राज्य-स्तर पर किया गया।

इसके विपरीत राजस्थान के निवासियों ने भी पूरी लगन के साथ साहित्य एवं साहित्यिकों की उल्लेखनीय सेवायें की हैं और इस दिशा में जैन यतियों एवं गृहस्थों की सेवा अधिक प्रशंसनीय रही है। उन्होंने विद्वानों एवं साधुओं से अनुरोध करके नवीन साहित्य का निर्माण करवाया। पूर्व निर्मित साहित्य के प्रचार के लिये ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ करवायी तथा उनको स्वाध्याय के लिये शास्त्र भण्डारों में विराजमान की। प्राचीन साहित्य का संग्रह किया तथा जीर्ण एवं शीर्ण ग्रंथों का जीर्णोद्धार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया। जैन संघ की इस अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय साहित्य सेवा के फलस्वरूप राजस्थान के गाँवों, कस्बों एवं नगरों में ग्रंथ संग्रहालय स्थापित किये गये तथा उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण का सारा भार उन्हीं स्थानों पर रहने वाले जैन श्रावकों को दिया गया।

साहित्य संग्रह की दिशा में राजस्थान के अन्य स्थानों की अपेक्षा जयपुर, नागौर, जैसलमेर आदि स्थानों की भण्डार संख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एवं विषय-वैचित्र्य आदि की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। राजस्थान के इन भण्डारों में ताड़पत्र, कपड़ा और कागज इन तीनों पर ही ग्रंथ मिलते हैं किन्तु ताड़पत्र के ग्रंथ तो जैसलमेर के भण्डारों में ही मुख्यतया संगृहीत हैं। अन्य स्थानों में उनकी संख्या नाममात्र की है। कपड़े पर लिखे हुये ग्रंथ भी बहुत कम संख्या में मिलते हैं। अभी जयपुर के

पार्श्वनाथ ग्रंथ भण्डार में कपड़े पर लिखा हुआ संवत् १५१६ का एक ग्रंथ मिला है। इसी तरह के ग्रंथ अन्य भण्डारों में भी मिलते हैं लेकिन उनकी संख्या भी बहुत कम है। सबसे अधिक संख्या कागज पर लिखे हुये ग्रन्थों की है जो सभी भण्डारों में मिलते हैं तथा जो १३वीं शताब्दी से मिलने लगते हैं।

जयपुर नगर सम्वत् १७८४ में बसाया गया था। यहाँ के शास्त्र-भण्डार संख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एवं विषय वैचित्र्य आदि सभी दृष्टियों से उत्तम हैं। वैसे तो यहाँ के प्रायः प्रत्येक मन्दिर में शास्त्र संग्रह किया हुआ मिलता है; किन्तु जैनविद्या संस्थान का शास्त्र भण्डार, बड़े मंदिर का शास्त्र भण्डार, ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पं. लूणकरणजी पांड्या के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पाटोदी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार आदि कुछ ऐसे शास्त्र भण्डार हैं जिनमें प्राकृत, अपभ्रंश भाषाओं के महत्त्वपूर्ण साहित्य का संग्रह है। अपभ्रंश का जितना अधिक साहित्य जयपुर के इन भण्डारों में संगृहीत है उतना राजस्थान के अन्य भण्डारों में संभवतः नहीं है।

यहाँ के शासक एवं जनता दोनों ने ही मिल कर अथक प्रयासों से साहित्य की अमूल्य निधि को नष्ट होने से बचा लिया। इसलिये यहाँ के शासकों ने जहां राज्य स्तर पर ग्रंथ संग्रहालयों एवं पोथीखानों की स्थापना की, वहीं यहाँ की जनता ने अपने-अपने मन्दिरों एवं निवास-स्थानों पर भी पाण्डुलिपियों का अपूर्व संग्रह किया। जयपुर का पोथीखाना जिस प्रकार प्राचीन पाण्डुलिपियों के संग्रह के लिये विश्वविख्यात हैं उसी प्रकार नागौर, जैसलमेर एवं जयपुर के जैन ग्रंथालय भी इस दृष्टि से सर्वोपरि हैं।

बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार -

बधीचन्दजी का दिगम्बर जैन मन्दिर जयपुर में जौहरी बाजार के घी वालों के रास्ते में स्थित है। यहाँ प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं के ग्रन्थों का उत्तम संग्रह किया हुआ मिलता है। कुछ ग्रन्थों की ऐसी प्रतियां भी यहाँ हैं जो ग्रन्थ निर्माण के काफी समय के पश्चात् लिखी होने पर भी महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसी प्रतियों में स्वयम्भू का हरिवंशपुराण, महाकवि वीर कृत जम्बूस्वामीचरित्र, कवि सधारू का प्रद्युम्नचरित आदि उल्लेखनीय हैं। भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति वड्डमाणकाव्य की वृत्ति की है जो संवत् १४८१ की लिखी हुई है।

ठोलियों के दिगम्बर जैन मन्दिर का शास्त्र भण्डार -

ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार ठोलियों के दिगम्बर जैन मन्दिर घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर में स्थित है। भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति ब्रह्मदेव कृत द्रव्यसंग्रह टीका की है जो संवत् १४१६ (सन् १३५९) की लिखी हुई है। इसके अतिरिक्त योगीन्द्रदेव का परमात्मप्रकाश सटीक, हेमचन्द्राचार्य का शब्दानुशासनवृत्ति एवं पुष्पदन्त का आदिपुराण आदि रचनाओं की भी प्राचीन प्रतियां उल्लेखनीय हैं।

शास्त्र भण्डार पंडित लूणकरणजी पांड्या -

यह लूणा पांड्या के मन्दिर के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। पंडित लूणकरणजी जैन यति थे, जो पांड्या कहलाते थे। सबसे प्राचीन प्रति इस भण्डार में अपभ्रंश के परमात्मप्रकाश की है जो संवत् १४०७ में लिखी गयी थी।

शास्त्रभण्डार श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बडा तेरापंथियों का -

जयपुर नगर बसने के कुछ समय बाद ही इस मन्दिर का निर्माण हुआ। इस मन्दिर में स्थित शास्त्र भण्डार जयपुर के अन्य शास्त्र भण्डारों की अपेक्षा उत्तम एवं वृहद् है। भण्डार में उपलब्ध अपभ्रंश साहित्य महत्वपूर्ण है। अपभ्रंश एवं प्राकृत के ग्रन्थों की प्राचीन प्रतियों के अतिरिक्त कुछ ऐसी भी रचनायें हैं जो केवल इसी भण्डार में सर्व प्रथम उपलब्ध हुई हैं। प्राचीन प्रतियों में कुन्दकुन्दाचार्य कृत प्राकृत पञ्चास्तिकाय की संवत् १३२९ की प्रति मिली है जो भण्डार में उपलब्ध प्रतियों में सबसे प्राचीन प्रति है। महाकवि पुष्पदन्त विरचित आदिपुराण की यहाँ एक सचित्र प्रति भी उपलब्ध हुई है। यह प्रति संवत् १५९७ की है। इसमें ५०० से भी अधिक रंगीन चित्र हैं। (इसका प्रकाशन जैनविद्या संस्थान से सन् २००६ में कर दिया गया है।) अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थों में वारकखरी दोहा, दामोदर कृत गेमिणाह चरिउ तथा तेजपाल कृत संभवणाह चरिउ उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश भाषा की महाकवि धवल कृत हरिवंशपुराण की एक प्राचीन एवं सुन्दर प्रति भी यहाँ है।

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन मंदिर पाटोदि -

इस मंदिर का निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ हुआ था और उसी समय यहाँ शास्त्र भण्डार की भी स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र भण्डार २०० वर्ष से भी अधिक पुराना है। भंडार में अपभ्रंश महाकवि पुष्पदन्त कृत जसहर चरिउ की

प्रति सबसे प्राचीन है जो सम्वत् १४०७ में चन्द्रपुर दुर्ग में लिखी गई थी। यहाँ प्राकृत के गोम्मटसार जीवकांड, समयसार आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ उपलब्ध है। अपभ्रंश भाषा के ग्रंथों में लक्ष्मण देव कृत णेमिणाह चरिउ, नरसेन की जिनरात्रिविधान कथा, मुनिगुणभद्र का रोहिणी विधान एवं दशलक्षण कथा तथा विमल सेन की सुगंधदशमीकथा यहाँ उपलब्ध है।

जयपुर से बाहर के शास्त्र भण्डार

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर, डीग -

भण्डार में प्राकृत की भगवती आराधना सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है। जिसका लेखन काल संवत् १५११ है। इसके अतिरिक्त अपभ्रंश काव्य भविसयत्त चरिउ (श्रीधर) की प्रति भी यहाँ उपलब्ध है।

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, टोडारायसिंह -

यहाँ अपभ्रंश के गायकुमार चरिउ (सम्वत् १६१२) जम्बू स्वामी चरिउ (सम्वत् १६१०) आदि ग्रन्थों के नाम उल्लेखनीय है।

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन मन्दिर संभवनाथ, उदयपुर -

यहाँ अपभ्रंश का यशःकीर्ति द्वारा रचित हरिवंशपुराण ग्रन्थ उपलब्ध है।

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर, बसवा -

महाकवि श्रीधर की अपभ्रंश कृति भविसयत्त चरिउ की संवत् १४६२ की पाण्डुलिपि यहाँ उपलब्ध है।

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन मन्दिर, करौली -

यहाँ दो मंदिर हैं और दोनों में ही शास्त्रों का संग्रह है। दिगम्बर जैन पंचायती मन्दिर एवं दिगम्बर जैन सोगाणी मन्दिर। अपभ्रंश भाषा की वरांग चरित्र की पाण्डुलिपि यहाँ उपलब्ध है।

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन तेरहपंथी मन्दिर, दौसा -

अधिकांश ग्रन्थ अपभ्रंश एवं हिन्दी के हैं। अपभ्रंश ग्रन्थों में जिणयत्त चरिउ (लाखू), सुकुमाल चरिउ (श्रीधर), वड्डुमाणकहा (जयमित्तहल), भविसयत्तकहा (धनपाल) एवं महापुराण (पुष्पदंत) के नाम उल्लेखनीय हैं।

उपर्युक्त सामग्री 'राजस्थान के ग्रन्थ भण्डारों की ग्रन्थ सूची' से संकलित की गई है। प्राकृत-अपभ्रंश की बहुलता के लिए अन्य शास्त्र भण्डार निम्न हैं :

शास्त्र भण्डार जैनविद्या संस्थान, जयपुर; भट्टारकीय शास्त्र भण्डार, नागौर; एवं जिनभद्रसूरि ज्ञान भण्डार, जैसलमेर। इन तीनों का यहाँ परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है :-

शास्त्र भण्डार जैनविद्या संस्थान, जयपुर -

यहाँ अपभ्रंश के बहुत ग्रन्थ संगृहीत हैं। कुछ के नाम इस प्रकार हैं :

महापुराण-पुष्पदंत (संवत् १४६१)	अमरसेण चरित्र-माणिक्य (संवत् १५७७)
पास पुराण-पद्मकीर्ति (संवत् १४९४)	श्रीपाल मैनासुंदर चरिय नरसेन (संवत् १५७९)
सुदंसण चरिय-णयणंदि (संवत् १५०४)	श्रेणिय चरिउ-जयमित्त हल्ल (संवत् १५८०)
जंबू सामि चरित-कविवीर (संवत् १५१६)	श्री बाहुबलि देव चरिय-बुह धणवाल (संवत् १५८४)
पउमचरिउ-स्वयंभू (संवत् १५४१)	प्रद्युम्न चरित्र-कवि सिंह (संवत् १५८६)
करकण्ड चरिउ-मुनि कनकामर (संवत् १५६३)	सुलोयणा चरिय-गणिदेवसेन (संवत् १५८७)
रयणकरण्ड-श्रीचन्द (संवत् १५६३)	भविसयत्त चरिय-धणवाल (संवत् १५८८)
मयण पराजय-चरिउ-हरिदेव (संवत् १५७६)	दोहापाहुड-महयन्दु (संवत् १६०२)

पण्डुपुराण-जसकित्ति (संवत् १६०२)

चन्दप्पह चरिय-जसकित्ति (संवत् १६०३)

अप्पसंवोह कव्व (संवत् १६०७)

जिणयत्त कहा-लहखू (संवत् १६११)

णायकुमार चरिउ-पुष्पदंत (संवत् १६१२)

मेहेसर चरिय-रइधू (संवत् १६१९)

धणकुमार चरिय-रइधू (संवत् १६३६)

अपभ्रंश भाषा के अतिरिक्त प्राकृत भाषा की भी यहाँ महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ हैं :

भगवती आराधना-आचार्य शिवकोटि (संवत् १५१४)

प्रवचनसार-आचार्य कुन्दकुन्द (संवत् १५४७)

त्रिलोकसार-आचार्य नेमिचन्द्र (संवत् १५६०)

णायधम्म कहा (संवत् १६००)

पंचास्तिकाय-आचार्य कुन्दकुन्द (संवत् १६२७)

तत्त्वसार-देवसेन (संवत् १६२९)

षडावश्यक (संवत् १६७४)

उवएसमाला-धम्मदास गणि (संवत् १७१४)

जसहर चरिय-पुष्पदन्त (संवत् १६८७)

मृगावती चरित्र-समय सुन्दरगणि (संवत् १६८७)

वर्द्धमान काव्य-जयमित्त हल्ल (संवत् १८१२)

मल्लि चरिउ-जयमित्त हल्ल

भविसयत्त चरित-विवुह सिरिहर

परमिट्टपयाससार-सुदकित्ति

पास-चरित-तेजपाल

मूलाचार (संवत् १७८८)

अष्टपाहुड-आचार्य कुन्दकुन्द (संवत् १८०१)

जंबूचरित्र (संवत् १८१५)

त्रिलोकसार-आचार्य नेमिचंद्र (संवत् १८५९)

स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा-स्वामीकार्तिकेय (संवत् १८६६)

कुम्पापुत्त-चरित्तं-माणिक्य सुन्दर (संवत् १८६९)

द्रव्य संग्रह-आचार्य नेमिचन्द्र (संवत् १९२२)

उपदेश-रत्नमाला - पदम जिणसरसूरि

बारहणुवेखा-आचार्य कुन्दकुन्द

आराधनासार-देवसेन

गोम्मटसार कर्मकाण्ड - आचार्य नेमिचन्द्र

समयसार-आचार्य कुन्दकुन्द

पंचसंग्रह-सुमतिकीर्ति

भट्टारकीय ग्रन्थ भण्डार, नागौर :

यह भण्डार प्राकृत-अपभ्रंश के ग्रन्थों के लिए महत्वपूर्ण है। यहाँ अपभ्रंश के बहुत ग्रन्थ संगृहीत हैं, कुछ के नाम इस प्रकार हैं:

परमात्मप्रकाश - योगीन्दुदेव (संवत् १४४०)

इष्टोपदेश-अमरकीर्ति (संवत् १४६८)

श्रीपाल चरित्र-पं. नरसेन (संवत् १५७१)

सकल विधि विधान काव्य - नयनन्दि (संवत् १५७७)

चन्द्रप्रभ चरित्र-यशःकीर्ति (संवत् १५८१)

मदनपराजय-हरिदेव (संवत् १५८७)

वर्द्धमान काव्य-जयमित्तहल्ल (संवत् १५९२)

यहाँ प्राकृत के भी कई ग्रन्थ संगृहीत हैं। कुछ के नाम इस प्रकार हैं :

जीव प्ररूपण-गुणरयण भूषण (संवत् १५११)

भगवती आराधना-शिवार्य (संवत् १५६८)

भावसंग्रह-देवसेन (संवत् १६०४)

वरांग चरित्र-पं. तेजपाल (संवत् १६०७)

सम्यक्त्व कौमुदी - रङ्धू (संवत् १६०९)

आत्म सम्बोध काव्य-रङ्धू (संवत् १६१२)

ऋषभनाथ चरित्र-पुष्पदन्त (संवत् १६१६)

भविष्यदत्त चरित्र - धनपाल (संवत् १६२८)

नेमिनाह चरित्र-पं. दामोदर

बाहुबली चरित्र-पं. धनपाल

सप्ततत्त्वादि वर्णन (संवत् १६१४)

भगवतीसूत्र (संवत् १६०९)

उपासकाध्ययन-आचार्य वसुनन्दि (संवत् १६४८)

लघु प्रतिक्रमण (संवत् १६५१)

आराधना सार-देवसेन

कल्पसूत्र बालावबोध (संवत् १७१७)

जिनभद्रसुरि ज्ञान भण्डार, जैसलमेर :

इस प्रसिद्ध भण्डार में प्राकृत के जैनआगम एवं आगमेतर ग्रन्थों का विशाल-संग्रह है। कुछ के नाम प्रस्तुत हैं:

आचारांग-सुधर्मा (संवत् १५००)

भगवती सूत्र (व्याख्या प्रज्ञप्ति)-सुधर्मा (संवत् १५००)

सूत्रकृतांग-सुधर्मा (संवत् १५००)

सूत्रकृतांग की निर्युक्ति-भद्रबाहु (संवत् १५७२)

स्थानांग-सुधर्मा (संवत् १५००)

आचारांग की निर्युक्ति-भद्रबाहु (संवत् १६७१)

आदि जैन आगम साहित्य संगृहीत है।

लोकनालि-जिनवल्लभ (संवत् १३००)

हरिबल चरित्र (संवत् १६००)

प्रवचन संदोह (संवत् १३००)

पउमचरियं-विमलसूरि (संवत् १६२५)

अष्ट प्रकारी पूजा कथानक (संवत् १४००)

कुर्मापुत्रकथा-जिणमाणिक्यसूरि (संवत् १६६४)

पुष्पमाला (संवत् १४७८)

अंगविद्या (संवत् १६६९)

धर्मोपदेश माला-जयसिंह सूरि (संवत् १४००-१५००)

पंच अणुव्रत (संवत् १७००)

महिपाल चरित्र-वीरदेव गणि (संवत् १५००)

नवतत्त्व (संवत् १७००)

गौतमपृच्छविचार (संवत् १५००)

वज्जालगं (संवत् १७००)

श्रीपाल चरित्र (संवत् १५७०)

तत्त्वतरङ्गिणि-तेजसागरगणि (संवत् १८००)

प्रवचनसारोद्धार - नेमिचन्द्रसूरि (संवत् १५८७)

प्राकृत-पाण्डुलिपि चयनिका

(६२)

अपभ्रंश के कुछ ग्रन्थ इस प्रकार हैं :

योगशास्त्र का बालावबोध (संवत् १६००)

ऋषभ विवाहलौ (संवत् १६०६)

सुदर्शनकथा (संवत् १७००)

पूरणश्रेष्ठी कथा (संवत् १७००)

रत्नपरीक्षा समुच्चय (संवत् १८००)

महावीर बत्तीसी (संवत् १९००)



प्रस्तुत आधुनिक रूपान्तरण पाण्डुलिपि का अक्षरशः रूपान्तरण है। इसका उद्देश्य विद्यार्थी को पाण्डुलिपि के अक्षर पहचानना एवं पाण्डुलिपि पढ़ना सिखाना है। संपादित पुस्तक एवं दिये गए आधुनिक रूपान्तरण के अक्षरों में कहीं-कहीं अन्तर हो सकता है। विद्यार्थी को चाहिए कि वह केवल पाण्डुलिपि के अक्षर एवं शब्दों को पहचानने का प्रयास करे।

पाठ १ भगवती आराधना

रस्स जह दुवारं मुहस्स चक्खुं तरुस्स जिह मूलं ॥ तह जाण सुसम्मत्तं णाणचरणवीरियांततवाणं ॥३६ ॥ भावाणुरागपेमाणुरागमज्जाणुरागरत्तो
व्वं ॥ धम्माधम्माणुरागरत्तो य होहि जिणसासणे णिच्चं ॥३७ ॥ दंसणभट्टो भट्टो दंसणभट्टस्स णत्थि णिव्वाणं ॥ सिज्झंति चरियभट्टा दंसणे भट्टा
ण सिज्झंति ॥३८ ॥ दंसणभट्टो भट्टो ण हु भट्टो होइ चरणभट्टो हु दंसणममुयंतस्स हु परिवडणं णत्थि संसारे ॥३९ ॥ सुद्धे सम्मत्ते अविरदो
वि अज्जेदि तित्थयरणामं । जादो हु सेणिगो आगमेसि अरहो अविरदो वि ॥४० ॥ कल्लणपरपरयं लहंति जीवा विसुद्धसम्मत्ता ॥ सम्मदंसणरयणं
णग्घदि ससुरासुरो लोओ ॥४१ ॥ सम्मत्तस्स य लंभो तेलोकस्स य हवेज्ज जो लंभो ॥ सम्मदंसणलंभो वरं खु तेलोक्कलं ॥ भादो ॥४२ ॥ लहूण
वि तेलोक्कं परिवडदि हु परिमिदेण कालेण । लहूण य सम्मत्तं अक्खयसुक्खं लहदि मोक्खं ॥४२ ॥ सम्मत्तं ॥
अरहंतसिद्धचेदियपवयणआयरियसव्वसाधूसु । तिव्वं करेहि भत्ती णिव्विदिगिंच्छेण भावेण ॥४३ ॥ संवेगजणिदकरणा णिस्सल्ल मंदरोव्व णिक्कंपा ।
जस्स दढा जिणभत्ती तस्स भवं णत्थि संसारे ॥४४ ॥ एया वि सा समत्था जिणभत्ती दुगाइं णिवारेदुं । पुणाणि य सरेदुं आसिद्धिपरंपरसुहाणं ॥४५ ॥
तह सिद्धचेदिए पवयणे य आयरियसव्वसाधूसु । भत्ती होदि समत्था संसारुछेदणे तिव्वा ॥४६ ॥ विज्जा वि भत्तिवंतस्स सिद्धिमुवयादि होदि
सफला य । किह पुण णिव्वुदिबीजं सिज्झिहदि अभत्तिमंतस्स ॥४७ ॥ तेसिं आराधणणायगाणं ण करेज्ज जो णरो भत्तिं । धत्तिं पि संजमंतो
सालिं सो ऊसरे ववदि ॥४८ ॥ वीएण विणा सस्सं इच्छदि सो वा समब्भएण विणा । आराधणमिच्छंतो आराधगभत्तिमकरंतो ॥४९ ॥ विधिणा
कदस्स सस्सस्स जहा णिप्पादयं हवदि वासं । तह अरहादियभत्ती णाणचरणदंसणतवाणं ॥५० ॥ वंदणभत्तीमेत्तेण चेवमिहिलाहिवो य पउमरहो ।
देविंदयाडिहेरं पत्तो जादो गणधरो या ॥५१ ॥ भत्ती आराधणापुरस्सरमणणहिदओ विसुद्धलेसाओ । संसारस्स खयकरं मा मोचीओ णमोकारं ॥५२ ॥

अरहन्तणमोक्कारो एक्को वि हवेज्ज जो मरणकाले । सो जिणवयणे दिट्ठो संसारछेदणसमत्थो ॥५३॥ जे भावणमोक्कारेण विणा सम्मत्तणाणचरणतवा ।
 ण हु ते होंति समत्था संसारुछेदणं कादुं ॥५४॥ चउरंगाए सेणाए णायगो जह पवत्तओ होदि । तह भावणमोक्कारो मरणे तवणाणचरणणं ॥५५॥
 आराधणापडायं गेण्हतस्स हु करो णमोकारो । मल्लस्स जयपडायं जह हत्थो घेतुकामस्स ॥५६॥ अणाणी वि य गोवो आराधित्ता मदो णमोक्कारं ।
 चम्पाए सेट्टिकुले जादो पत्तो य सामण्णं ॥५७॥ णमोक्कारं ॥ णाणोवउगरहिदेण ॥ ण सक्का चित्तणिग्गहो काउं । णाणं अंकुसभूदं मत्तस्स हु
 वित्तहत्थिस्स ॥५८॥ विज्जा जहा पिसायं सुट्ठु वउत्ता करेदि पुरिसवसं णाणं हिदयपिसायं सुट्ठु वउत्तं तह करेदि ॥५९॥ उवसमइं कण्हसप्पो
 जह मंतेण विधिणा पउत्तेण । तह हिदयकिण्हसप्पो सुट्ठुवउत्तेण णाणेण ॥६०॥ आरण्णओ वि मत्तो हत्थी णियमिज्जदे वरत्ताए । जह तहा
 णियमिज्जदि सो णाणवरत्ताए मणहत्थी ॥६१॥ जह मक्कडओ खणमवि मज्झत्थो अछिदुं ण सक्केइ । तह खणमवि मज्झत्थो विसएहिं विणा
 ण होइ मणो ॥६२॥ तम्हा सो उड्डुहणो मणमक्कडओ जिणोवएसेण । रामेदव्वो णियदं तो सो दोसं ण काहिदि सो ॥६३॥ तम्हा णाणुवओगो
 खवयस्स विसेसओ सदा भणिदो । जह विंधणोवओगो चंदयवेज्जं करितस्स ॥६४॥ णाणपदीवो पज्जलइ जस्स हियए विसुद्धलेसस्स ।
 जिणदिट्ठमोक्खमग्गे पणास

पाठ २ भगवती आराधना

ण भयं ण तस्सत्थि ॥६५ ॥ णाणुज्जोवो णाणुज्जोवस्स णत्थि पडिघादो । दीवोहि खेत्तमप्पं सूरु णाणं जगमसेसं ॥६६ ॥ णाणं ययासओ सो धओ तवो संजमो य गुत्तियरो । तिण्हंपि समाओगे मोक्खो जिणसासणे दिट्ठो ॥६७ ॥ णाणं करणविहूणं लिंगगाहणं च दंसणविहूणं । संजमहीणो य तवो जो कुणदि णिरत्थयं कुणदि ॥६८ ॥ णाणुज्जोएण विणा जो इच्छदि मोक्खसग्गमुवगंतुं । गंतुं कडिल्लमिच्छदि अंधलओ अंधयारम्मि ॥६९ ॥ जइदा खंडसिलोगेण जमो मरणा दु फिडिओ राया । पत्तो य सुसामण्णं किं पुण जिणउत्तसुत्तेण ॥७० ॥ दढसुप्पो सूलहदो यंचणमोक्कारमेत्त सुदणाणे । उवजुत्तो कालगदो देवो जाओ महद्धीउ ॥ ७१ ॥ ण य तंमि देसयाले सव्वो वारसविधो सुदक्खंधो । सक्को अणुचिंतेदुं वलिणा वि समत्थवित्तेण ॥७२ ॥ एक्कमि वि जंमि पदे संवेगं वीदरागमगामि । गच्छदि णरो अभिक्खं तं मरणंते ण मोत्तव्वं ॥७३ ॥ णाणंगदं ॥ परिहर छज्जीवणिकायवहं मणवयणकायजोगेहिं । जावज्जीवं कदकारिदाणुमोदेहिं उवउत्तो ॥७४ ॥ जह ते ण पियं दुक्खं तहे तेसिंपि जाण जीवाणं । एवं णच्चा अप्पोवम्मिओ जीवेसु होहि सदा ॥७५ ॥ तण्हाल्लुहादिपरिदाविदो जीवाणं घादणं किच्चा । पडिकारं कादुं जे मात्त चिंतेसु लभसु सदिं ॥७६ ॥ रदिअरदिहरिसभयउस्सुगत्तदीणत्तणादिजुत्तो वि । भोगपरिभोगहेदुं मा कुविचिंतेहि जीववहं ॥७७ ॥ मधुकरिसमज्जिपमहुं व संजमं थोव थोव संगलियं । तेलोक्कसव्वसारं णा वात्ररेहिं मा जहसु ॥७८ ॥ दुक्खेणभदि माणुस्सजादिमदिसवणदंसणचरित्तं । दुक्खज्जियसामण्णं मा जहसु तणं व अगणंतो ॥७९ ॥ तेलोक्कजीविदादो वरेहिं एक्कदर गत्ति देवेहिं । भणिदो को तेलोक्कं वरेज्ज संजीविदं मुच्चा ॥८० ॥ जं एवं तेलोक्कं णग्घदि सव्वस्स जीविदं तम्हा । जीविदघादो जीवस्स होदि तेलोक्कघादसमो ॥८१ ॥ णत्थि अणूदो अप्पं आयासादो अणूणयं णत्थि । जह तह जाण महल्लं ण वयमहिंसासमं अत्थि ॥८२ ॥ जह पव्वएसु मेरू उच्चाओ होइ सव्वलोयंमि । तह जाणसु उच्चायं सीलेसु वदेसु य अहिंसा ॥८३ ॥ सव्वो वि

जहायासे लोगो भूमीए सव्वदीवुदधी । तह जाण अहिंसाए वदगुणसीलाणि तिट्ठंति ॥८४॥ कुव्वंतस्स वि जत्तं तुंवेण विणा ण ठन्ति जह अरया ॥
अरएहिं विणा य जहा णट्ठं णेमी दुं चक्कस्स ॥८५॥ तह जाण अहिंसाए विणा ण सीलाणि उंति सव्वाणि । तिस्सेव रक्खणट्ठं सीलाणि वदीव
सस्सस्स ॥८६॥ सीलं वदं गुणो वा णाणं णिस्संगदा सुहच्चाओ । जीवेहिंसंतस्स हु सव्वे वि णिरछया होंति ॥८७॥ सव्वेसिमासमाणं हिदयं गब्भो
व सव्वसत्थाणं । सव्वेसि वदगुणाणं पिंडो सारो अहिंसा हु ॥८८॥ जम्हा असत्ववयणादिएहिं दुक्खं परस्स होदित्ति । तप्परिहारो तम्हा सव्वे वि
गुणा अहिंसाए ॥८९॥ गोवंभणिंत्थिवधमेत्तणियत्ती यदि भवे परमधम्मो । परमो धंमो किह सो ण होइ जा सव्वभूददया ॥९०॥ जं जीवणिकायवधेण
विणा इंदियकदं सुहं णत्थि । तम्मि सुहे णिस्संगो तम्हा सो रक्खदि अहिंसं ॥९१॥ जीवो कसायबहुलो संतो जीवाण घादणं कुणदि । सो जीववधं
परिहरंदि सदा जो जिदकसाओ ॥९२॥ आदाणे णिक्खेवे वोसरणे ठाणगमणसयणेसु । सव्वत्थ अप्पमत्ते दयावरे होदि हु अहिंसा ॥९३॥ काएसु
णिरारंभे फासुगभोजिमि णाणरदिगम्मि । मणवयणकायगुत्तम्मि होदि सयला अहिंसा दु ॥९४॥ आरंभे जीववहो अप्पासुगसेवणे य अणुमोदो ।
आरंभादीसु मणो णाणरईए विणा चरदि ॥९५॥ सव्वे वि य संवंधा पत्ता सव्वेण सव्वजीवेहिं । वो मारंतो जीवो

पाठ ३ अष्टपाहुड

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ काऊण णमोयारं । जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स ॥ दंसणमगं वोच्छामि । जहाकम्मं समासेण ॥१॥ दंसणमूलो धम्मो ॥ उवइट्ठं जिणवरेहि सिस्साणं ॥ तं सोऊण सकण्णे ॥ दंसणहीणो ण वंदिव्वो ॥२॥ दंसणभट्टा भट्टा ॥ दंसणभट्टस्स णत्थि णिव्वाणं ॥ सिज्झंति चरियभट्टा ॥ दंसणभट्टा ण सिज्झंति ॥३॥ सम्मत्तरयणभट्टा ॥ जाणंता बहुविहाइ सत्थाइ ॥ आराहणविरहिया ॥ भमंति तत्थेव तत्थेव ॥४॥ सम्मत्तविरहिया णं । सुट्टु वि उगं तवं चरंता णं ॥ ण लहंति वोहिलाहं ॥ अवि वाससहस्सकोडीहिं ॥५॥ सम्मत्तणाणदंसण ॥ वलवीरिय वड्ढमाण जे सव्वे ॥ कलिकलुसपावरहिया ॥ वरणाणी हुंति अइरेण ॥६॥ सम्मत्तसलिलपवहो ॥ णिच्चं हियाए ण पवहए जस्स ॥ कम्मं वालुयवरणं ॥ बंधुच्चिय णासए तस्स ॥७॥ जे दंसणेसु भट्टा ॥ णाणे भट्टा चरित्तभट्टा य ॥ एदे भट्टु वि भट्टा ॥ सेसं पि जणं विणासंति ॥८॥ जो को वि धम्मशीलो ॥ संजमतवणियमजोगगुणधारी ॥ तस्स य दोस कहंता भग्गा भग्गतणं दिंति ॥९॥ जह मूलम्मि विणट्टे दुम्मस्स परिवार णत्थि परिवड्ढी ॥ तह जिणदंसणभट्टा मूलविणट्टा ण सिज्झंति ॥१०॥ जह मूलाओ खंधो । साहापरिवार बहुगुणो होइ ॥ तह जिणदंसणु मूलो ॥ णिद्धिट्ठो मोक्खमगगस्स ॥११॥ जे दंसणेसु भट्टा ॥ पाए पाडंति दंसणधराणं ॥ ते होंति लुल्लमूया ॥ वोही पुणु दुल्लहा तेसिं ॥१२॥ जे वि पडंति न तेसिं ॥ जाणंता लज्जागारवभएण ॥ तेसिं पणत्थि वोही ॥ पावं अणुमोयमाणाणं ॥१३॥ दुविहं पि गंथिचाए ॥ तीसु वि जोएसु संजम ठादि ॥ णाणम्मि करणसुद्धे ॥ अब्भसणे दंसणं होइ ॥१४॥ सम्मत्तादो णाणं ॥ णाणादो सव्वभावउवलद्धी ॥ उवलद्धिपयत्थे पुणु ॥ सेयासेयं वियाणेहिं ॥१५॥ सेयासेयविदण्हू उद्धुददुस्सील सीलवंतो वि ॥ सीलफलेणब्भुदयं ॥ तत्तो पुणु लहइ णिव्वाणं ॥१६॥ जिणवयणओसहमिणं विसयसुहविरेयणं अमियभूयं ॥ जरमरणवाहिहरणं ॥ खयकरणं सव्वदुक्खाणं ॥१७॥ एक्कं जिणस्स रूवं ॥ विदियं उक्किट्टुसावयाणं तु । अवरट्टियाय तइयं ॥ चउत्थ पुणु लिंगं दंसणं णत्थि ॥१८॥ छदव्वणवपयत्था ॥ पंचत्थी सस तच्च नि ॥

पाठ ४ अष्टपाहुड

परिहर धम्मे अहिंसाए ॥१५॥ पव्वज्ज संगचाए ॥ पयट्ट सुतवे सुसंजमे भावे ॥ होइ सुविसुद्धभणं ॥ णिम्मोहे वीयरयत्ते ॥१६॥ मिच्छादंसणमग्गे ॥ मलिणे अणाणमोहदोसेहिं ॥ वज्झंति मूढजीवा ॥ मिच्छत्ताबुद्धिउदयेण ॥१७॥ सम्मदंसण पस्सदि ॥ जाणदि णाणेण दव्वपज्जाय ॥ सम्मेण य सहहदि य ॥ परिहरदि चरित्तजे दोसा ॥१८॥ एए तिण्ण विभाव ॥ हवंति जीवस्स मोहरहियस्स ॥ णियगुणआराहंतो ॥ अचिरेण वि कम्म परिहरइ ॥१९॥ संखिज्जमसंखिज्जं ॥ गुणं च संसारिमेरुमित्ता णं ॥ सम्मत्तमणुचरंता ॥ करंति दुक्खक्खयं धीरा ॥२०॥ दुविहं संजमचरणं ॥ सायारं तह हवे णिरायारं ॥ सायारं सग्गंथे ॥ परिग्गहरहियं णिरायारं ॥२१॥ दंसणवय सामाइय ॥ पोसह सच्चित्त रायभत्ते य ॥ वंभारंभपरिग्गह अणुमणु उदिट्ट देसविरदो य ॥२२॥ पंचेव अणुवयाइ ॥ गुणव्वयाइ तहेव तिणेय ॥ सिक्खावेय चत्तारि ॥ संयमचरणं च सायारं ॥२३॥ थूले तसकायवहे ॥ थूले मोसे तित्तिक्ख थूले य ॥ परिहारो परपिम्मे परिग्गहारंभ परिमाणं ॥२४॥ दिसिविदिसिमाण पढमं ॥ अणत्थदंडस्स वज्जणं विदियं ॥ भोगोपभोयपरिमा ॥ इयमेव गुणव्वया तिण्णि ॥२५॥ सामाइयं च पढमं ॥ विदियं च तहेव पोसहं भणियं ॥ तइयं च अतिहिपुज्जं ॥ चउत्थं सल्लेहणा अंते ॥२६॥ एवं सावयधम्मं ॥ संजमचरणं उदेसियं सयलं ॥ सुद्धं संजमचरणं ॥ जइधम्मे ॥ णिक्कलं वोत्थे ॥२७॥ पंचेदियसंवरणं ॥ पंचवयापंचविंसकिरिया सु ॥ पंच समिदि तय गुत्तिं संजम चरण णिरायारं ॥२८॥ अमणुण्णे य मणुण्णे ॥ सजीवदव्वे अजीवदव्वे य ॥ ण करोदि रायदेसो ॥ पंचेदियसंवरो भणिओ ॥२९॥ हिंसाविरइ अहिंसा ॥ असच्चविरइ अदत्तविरई य ॥ तुरियं अवंभविरइ ॥ पंचम संगम्मि विरदी य ॥३०॥ साहंति जं महल्ला आयरियं जं महल्लपुव्वेहिं ॥ जं च महल्लाणि तदो ॥ महल्लया इंतहेयाइं ॥३१॥ वयगुत्ती मणुगुत्ती ॥ इरियासमदी सुदाणणिक्खेवो ॥ अवलोय भोयणाए हिंसाए भावणा होंति ॥३२॥ कोहभयहासलोहा ॥ मोहाविवरीयभावणा चेव ॥ विदियस्स भावणाए ॥ ए पंचेव य तहा होंति ॥३३॥ सुण्णायारणिवासो विमोचियावास जं परोधं च ॥ एसणसुद्धिस

पाठ ५ अष्टपाहुड

हु सो मुणेयव्वो ॥ खेडे वि ण कायव्वं । पाणिपत्तं सचेलस्स ॥७॥ हरिहरतुल्लो वि णरो । सग्गं गच्छेइ एइ भवकोडी । तह वि ण पावइ सिद्धिं । संसारत्थो पुणो भणिदो ॥८॥ उक्किट्टसीहचरियं । बहुपरिकम्मो य गरुय भारो य । जो विहरइ सच्छंदं पावं गच्छेदि हवदि मिच्छत्तं ॥९॥ णिच्चेलपाणिपत्तं । उवइट्टं परमजिणवरिंदेहिं । इक्को वि मुखमग्गो सेसा य अमग्गया सव्वे ॥१०॥ जो संजमेसु सहिओ । आरंभपरिग्गहेसु विरओ वि । सो होइ वंदणिज्जो । ससुरासुरमाणसे लोए ॥११॥ जे वावीसपरीसह । सहंति सत्तीसएहिं संजुत्ता । ते हुंति वंदणीया । कम्मक्खयणिज्जरा साहू ॥१२॥ अविसेसी जे लिंगी । दंसणणाणेणं सम्म संजुत्ता ॥ चलेण परिग्गहिया । ते भविया इच्छणिज्जाया ॥१३॥ इच्छायारगिहत्थं । सुत्तत्थिओ जो हु छिंदए कम्मं । ठाणे ठियसम्मत्तं । परलोइ सुहंकारो होइ ॥१४॥ अह पुण अप्पा णच्छदि । धम्मंसु करेदि णिरवसेसाइ । तह वि ण पावदि सिद्धिं । संसारत्थो पुणो भणिदो ॥१५॥ एएण कारणेण य । तं अप्पा सद्धहेह तिविहेण । जेण य लहेह मोक्खं तं जाणिज्जह पयत्तेण ॥१६॥ वालग्गकोडिमित्तं परिग्गहगहणं ण होइ साहूणं । भुंजेइ पाणिपत्ते । दिण्णणं इकठाणम्मि ॥१७॥ जहजाइरुवसरिसो । तिलतुसमित्तं ण गिहदि हत्थेसु । जइ लेइ अप्पबहुयं । ततो पुणु जाइ णिग्गोयं ॥१८॥ जस्स परिग्गहगहणं । अप्पा बहुयं च हवइ लिंगस्स । सो गरहिउ जिणवयणे । परिग्गह रहिओ णिरायारो ॥१९॥ पंचमहव्वयजुत्तो । तिहिं गुत्तिहिं जो स संजदो होइ । णिग्गंथमुक्खमग्गो । सो होदि हु वंदिणिज्जो य ॥२०॥ दुइयं च वुत्त लिंगं । उक्किट्टं अवरसावयाणंतु । भिक्खं भमेह पत्ते । समिदीभासेण मोणेण ॥२१॥ लिंगं इत्थीण हवदि । भुंजइ पिंडं सुएयकालम्मि । अज्जिय वि इक्कवत्था । वड्ढावरणेण भुंजेइ ॥२२॥ णवि सिज्झदि वत्थधरो । जिणसासण जइ वि होइ तित्थयरो णग्गो विमुक्खमग्गो सेसा उम्मग्गयासणं ॥२३॥ लिंगंम य इत्थीणं । थणंतरे णहिकक्खदेसेसु । भणिओ सुहुमो काओ । तेसिं कह होइ पव्वज्जा ॥२४॥ जइ दंसणेण सुद्धा उत्तम मग्गेण सावि संजुत्ता ।

घो

पाठ ६ अष्टपाहुड

सा होइ वंदणीया ॥ णिगंथा संजदा पडिमा ॥११॥ दंसण अणंत णाणं । अणंतवीरिय अणंतसुक्खा य । सासयसुक्ख अदेहा । मुक्का कम्मट्टुबंधेहिं ॥१२॥ णिरुवममचलमखोहा । णिम्मविया जंगमेण रुवेण । सिद्धठाणम्मि ठिया । वोसरपडिमा धुवो सिद्धा ॥१३॥ ॥पडिमा ३॥ दंसेइ मोक्खमगं । सम्मत्तं संजमं सुधम्मं च । णिगंथं णाणमयं । जिणमग्गे दंसणं भणियं ॥१४॥ जह फुल्लं गंधमयं । भवदि हु खीरं स धियमयं चावि । तह दंसणम्मि सम्मं । णाणमयं होइ रुवत्थं ॥१५॥ ॥दंसणं ४॥ जिणबिंबं णाणमयं । संजमसुद्धं सुवीयरायं च । जं देइ दिक्खसिक्खा । कम्मक्खयकारणे सुद्धा ॥१६॥ तस्स य करहु पणामं । सव्वं पुज्जं च विणयवच्छल्लं । जस्स य दंसणणाणं अत्थि धुवं चेषणा भावो ॥१७॥ तववयगुणेहिं सुद्धो । जाणदि पिच्छेइ सुद्धसम्मत्तं । अरहंतमुद्ध एसा । दायारी दिक्खसिक्खा य ॥१८॥ जिणविंवं ॥ ५॥ दढसंजममुद्धाए । इंदियमुद्धा कसायदढमुदा । मुद्धा इह णाणाए । जिणमुद्धा एरसा भणिया ॥१९॥ जिणमुद्धा ॥६॥ संजमसम्मत्तस्स य । सुज्झाणजोयस्स मोक्खमग्गस्स । णाणेण लहदि लक्खं तम्हा णाणं च णायव्वं ॥२०॥ जह ण वि लहदि हु लक्खं । रहिओ कंडस्स वेज्झयविहीणो । तह ण वि लक्खदि लक्खं । अण्णाणी मोक्खमग्गस्स ॥२१॥ णाणं पुरिसस्स हवदि । लहदि सुपुरिसो वि विणयसंजुत्तो णाणेण लहदि लक्खं । लक्खंतो मोक्खमग्गस्स ॥२२॥ मइधणुहं जस्स थिरं । सुइगुण वाणा सुअत्थि रयणत्तं परमत्थबद्धलक्खो ण वि चुक्कदि मोक्खमग्गस्स ॥णाणं ॥ ७॥ सो देवो जो अत्थं । धम्मं कामं सुदेइ णाणं च । सो देइ जस्स अत्थि दु । अत्थो धम्मो य पव्वज्जा ॥ धम्मो दयाविसुद्धो । पव्वज्जा सव्वसंगपरिचत्ता । देवो ववगयमोहो । उदयकरो भव्वजीवाणं ॥२५॥ देवं ॥८॥ वयसम्मत्तविसुद्धे । पंचेंदियसंजदे णिरावेक्खो । ण्हाएउ मुणी तित्थे । दिक्खासिक्खासुण्हाणेण ॥२६॥ जं णिम्मलं सुधम्मं । सम्मत्तं संजमं तवं णाणं । तं तित्थं जिणमग्गे । हवेइ जदि संतिभावेण ॥२७॥ तित्थं ॥ णामे ठवणे हि य सं । दव्वे भावे य सगुणपज्जाया । चउणायदि संपदिमे । भावा भावंति अरहंतं ॥२८॥ दंस

पाठ ७ दशवैकालिक

नारिं वा सुअलंकियं भक्खरं पि व दट्ठणं दिट्ठि पट्ठि समाहरे ॥५५॥ हत्थ पाय पडिच्छिन्नं कण्ण नास विग्गप्पियं । अवि वाससयं नारिं
बंधयारि विवज्जए ॥५६॥ विभूसा इत्थि संसग्गि पणीय रस्स भायेणं । नरस्सत्त गवेसिस्स विसं तालउड जहा ॥५७॥ अंग पच्चंग संठाणं चारुल्ल
विय पेहियं । इत्थीणं तं न निज्जाए काम राग विवदण ॥५८॥ विसएसु मणुण्णेषु पेमं नाभि निवेसए । अणिच्चं तेसिं विण्णाय परिणामं
पुगालाणयं ॥५९॥ पुगालाण परिणाम्मं तेस्सि नच्चा जहा तहा । विणीयतण्हो विहरे सीईभुएण अप्पणा ॥६०॥ जाए सद्धाए निक्खंतो
परियायट्ठाण मुत्तमं तमेव अणुपालिज्जा गुणे आयरियसमये ॥६१॥ तवं चिमं संजमं जोगयं च सज्जाय जोग च सया अहिट्ठिए । सुरे व सेणाए
सम्मत्तमाउहे अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥६२॥ सज्जाय सज्जाणरयस्स ताइणो अप्पावभावास्स तवे रयस्स । विसुडज्जई जं सि मलं पुरेकडं
समीरियं रूप्पमलं व जोइणो ॥६३॥ से तारिसे दुक्खसहेजिइंदिए सुएण ज्जुत्तेअममे अकिंचणे । विरायईक्कमघणंमि अवगाए कसिणब्भपुरावगमेवचंदिमे
तित्थेमि ॥६४॥ (आयार पणिहि अज्जयणं सम्मत्तं ८ ।)

थंभा व कोहा व मयप्पमाया गुरुसगासे विणयं न सिक्खे । सोचेवओत्तस्स अभूइभावो फलं व कीयस्स वहाय होइ ॥१॥ जे यावि
मंदिं ति गुरु व इज्जा डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा । हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा करंति आस्सायण ते गुरुणं ॥२॥ पगईए मंदा विभवंति
एगे डहराचिय जे सुयबुद्धोववेया । आयारमंतागुण सुद्धि अप्पा जेहिलिया सिहिरि व भास कुज्जा ॥३॥ जे यावि नागं डहरंति न वा आसायए
से अहियाय होइ । एवायरिय पिहुहि लयंतो नियव्वइ जाइ पहं खुमंदो ॥४॥ आसीविसोवावि परंसुरुट्ठो किं जीव नासाओ परंतु कुज्जा । आयरिय
पाया पुण अप्पसुना अबोहिया सायण नत्थि मुक्खो ॥५॥ जो पावगं जलियमव्वक

पाठ ८ कुम्मापुत्तचरियं

नमिरुण वड्डमाणं असुरिदसुरिदपणयकमकमलं । कुम्मापुत्तचरित्तं वुच्छामि अहं समासेण ॥१॥ रायगिहे वरनयरे नयरेहापत्तसयलपुरिसवरे । गुणसिलए गुणनिलए समोसढो वड्डमाणजिणो ॥२॥ देवेहिं समोसरणं विहियं बहुपावकम्मओसरणं । मणिकणयरवयसारंप्पाकरपरिफुरियं ॥३॥ तच्छ निविच्छो वीरो कणयससिरीसमुद्धगंभीरो । दाणाइचउप्पयारं कहेइ धम्मं परमरम्मं ॥४॥ दाणसीलतवभावाणभेएहिं चउविहो हवइ धम्मो । सव्वेसु तेसु भावो महप्पभावो मुणेअव्वो ॥५॥ भावो भवुदहितरणि भावो सग्गापवग्गपुरसरणी । भविआणं मणचिंतिअअचिंतचिंतामणी भावो ॥६॥ भावेण कुम्मपुत्तो अवगयतत्तो अगहि आचरित्तो । गिहवासे वि वसंतो संपत्तो केवलं नाणं ॥७॥

इच्छंतरे इंदभूई नामं अणगारे भगवओ महावीरस्स जिट्ठे अतेवासी ग्गेयमगुत्तो समचउरंससरीरे वज्जरिसहनारायसंघयणें कणयपुलगनिघसपम्मग्गे उगत्तवे दित्ततवे महितेवे घोरतवे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छुद्धसरीरे संखित्तविउलतेउलेसे चउदसपूव्वी चउणाणोवगए पंचेहिं अणग्गरसएहिं सद्धि संपरिवुडे छट्टंछट्टेणं अप्पाणं भावेमाणे उट्टाए उट्टेइ उट्टित्ता भगवं महावीरं तिक्खुत्तो अर्याहिणंपयहिणं करेइ करित्ता वंदइ मंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी भगवं को नाम कुम्मापुत्तो कहं व तेण गिहवासे वसंतेणं भावणं भावंतेणं अणंतं अणुत्तरं निव्वाघायं निरावरणं कसिणं पडिपुनं केवलवरणाणदंसणं समुप्पाडिअं तए णं समणे भगवं महावीरे जोयणग्गमिणीए सुधासमाणीए वाणीए वागरेइ ग्गेयम जं मे पुच्छंसि कुम्मापुत्तस्स चरिअत्थरियं । एगग्गमणो होउ समग्गमवि तं निसामेसू ॥८॥ तथाही ॥ जंबुद्धीवे देवे भरहखित्तस्स मब्भयारंमि । दुग्गमपुराभिहाणं जगप्पहाणं पुरं अच्छि ॥९॥ तच्छ य दोणनरिदो पयावलच्छिइ निज्जिअदिणंदो । निच्च अरिअण्णवज्जं पालइ निक्कंटयं रज्जं ॥१०॥

पाठ ९ कुम्भापुत्तचरियं

तं निसुणिअ भद्दमुही भद्दमुही नाम जक्खिणी हिट्ठा । माणवईरूवधरा कुमरसमीवंमि संपत्ता ॥२०॥ दट्टणं त कुमारं बहुकुमरुच्छालणिक्क
तल्लिच्छं । सा जंपई हसिऊणं किमिमेणं वंकरमणेणं ॥२१॥ जइ ताव तुब्भ चित्तं विचित्तचित्तंमि चंचलं हेइ । ता मब्भं अणुधावसु वयणमिणं
सुणिय सो कुमरो ॥२२॥ तं कन्नं अणुधावइ तन्मयणंकउहलाकुलिअचित्तो । तप्पुरओ धावन्ति सा वि हु तं नियवणं नेइ ॥२३॥ बहुसालवडस्स
अहो पहेण पायालमब्भमाणीओ । सो पासइ कणयमयं सुरभवणमईव रमणीयं ॥२४॥ तं च केरिसं रयणमयथंभपंतीकंतीभरब्भरिअभित्तरपएसं ।
मणिमयतोरणधोरणितरुणपहाकिरणकबुरिअं ॥२५॥ मणिमयथंभअहिट्ठिअपुत्तलिआकेलिखोभिअजणोहं । बहु भत्तिवित्तिचित्तिअ-
गवखसंदोहकयसोहं ॥२६॥ एअमवलोइऊणं सुरभुवणं भुवणचित्तवुद्यकरं । अइ विम्हयमावन्नो कुमरो इअ चिन्तिउं लग्गो ॥२७॥ किं इंदजालमेअं
सुमिणं सुसणंमि दीसइएइच्छ । अहयं निअ नयरीओ इह भवणो केण आणीओ ॥२८॥ इअ संदेहाकुलिअं कुमरं विनिवेसिऊण पल्लंके । विन्नवइ
वंतरवहू सामिअवयणं निसामेसु ॥२९॥ अच्छमए अच्छमए चिरेण कालेण नाह दिट्ठो सि । सुरभिवणे सुरभुवणे निअकज्जे आणियो सि
तुमं ॥३०॥ अद्यं चिअ मब्भ मणो मणोरहो कप्पपायवो फलिओ । जं सुकसुकववसओ अच्छ तुमं मब्भ मिलिओ सि ॥३१॥ ई अव

पाठ १० कुम्भापुत्तचरियं

री तस्सरीरंमि ॥३५ ॥ पुव्वभवंतरभज्जा लज्जाइ विमुत्तु भुंजए भोए । एवं विसयसूहाइं दुन्नि वि विलसंति तच्छ ठिआ ॥३६ ॥

चतुर्विधभोगस्वरूपं स्थानांगेष्युक्तं चउहिं ठाणेहि ठाणेहि देवाणं संवासपन्नत्ते ।तं जहा ॥ देवे नामं एगे देवीए सद्धिं संवासंमागच्छिज्जा १. देवे नामं एगे छवीए सद्धिं संवासंमागच्छिज्जा २. छवीए नामं एगे देवीए सद्धिं संवासंमागच्छिज्जा ३. छवीए नामं एगे छवीए सद्धिं संवासंमागच्छिज्जा ४. इओ अह तस्स अम्मापिअरो पुत्तविओगेण दुक्खिया णिच्चं । सव्वच्छ वि सोहंति अ लहंति न हि सुद्धिमत्तं पि ॥३७ ॥ देवेहि अवहरियं इअर नरेहि पाविछए कहं चत्थु । जेण नराण सुराणं सत्तीए अंतरं गुरुअं ॥३८ ॥ अह तेहिं दुक्खिएहिं अम्मापिअरेहि केवली पुट्ठो । भयवं कहेह अम्हं सो पुत्तो अत्थि कत्थ गओ ॥३९ ॥ तो केवली पयंपइ णेह सवणेहिं सावहाणमणो । तुम्हाणं सो पुत्तो अवहरिओ वंतरिए अ ॥४० ॥ ते केवलिवयणेणं अइव अछरिअविम्हिआ जाया । साहंति कहं देवा अपवित्तनरं अवहरंति ॥४१ ॥ ॥ यदुक्तमागमे ॥ चत्तारि पंच जोयणसयाइ गंधो अ मणुअलोगस्स । उड्डं वच्चइ जेणं न हु देवा तेण आवति ॥४२ ॥ तओ केवलिना भणियं पंचसू जिणल्लाणेसु चैव महरिसितवाणुभावाओ । जम्मंतरणेहेण य आगच्छंति सूराइहयं ॥४३ ॥ तो केवलिणा कहियं तीसे जम्मंतरसिणेहाइ । ते बिंति तओ सामिअ अइबलिओ कम्मपरिणामो ॥४४ ॥ भयवं कया वि होहि अम्माणं कुमारसंगमो कह वी । तेणुत्तं होहि पुण जयेइ हवमागमिसामो ॥४५ ॥ इय संबंधं सूणिओ संविग्गा कुमरमा अपि अपिअरो अ । लहूपुत्त ठविअ रज्जे तयंतिए चरणमावत्रा ॥४६ ॥ दुक्करं तवचरणपरा परा

पाठ ११ उत्तराध्ययन

डगं चइत्ताणं । विट्ठं भुंजइ सूयरे ॥ एवं सीलं चइत्ताणं ॥ दुस्सीले रमइ मिए ॥५॥ सुणियाभावं साणस्स ॥ सूयरस्स नरस्स य ॥ विणए ठवेज्ज अप्पाणं ॥ इच्छंतो हियमप्पणो ॥६॥ तम्हा विणयमेसेज्जा ॥ सीलं पडिलभे ज्जओ । बुद्ध पुत्त नियागट्ठी ॥ न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥७॥ निस्संते सियामुहरी । वुद्धाणं अंतिए सया । अट्टजुत्ताणि सिक्खिज्जा । निरट्टाणि ओ वज्जए ॥८॥ अणुसासिओ न कुप्पिज्जा । खंतिं सेवेज्ज पंडिए । खुड्ढेहिं सह संसगिं । हासं कीडं च वज्जए ॥९॥ मा य चंडालियं कासी । बहुयं मा य आलवे । कालेण य अहिज्जित्ता ॥ तओ ज्ञाएज्ज एगओ ॥१०॥ आहच्च चंडालियं कहु ॥ न निणहवेज्ज कयाइ वि । कडं कडे त्ति भासिज्जा । अकडं तो कडि त्ति य ॥११॥ मा गलियस्सेव कसं ॥ वयणमिच्छे पुणो पुणो । कसं व दट्टमाइण्णे ॥ पावगं परिवज्जए ॥१२॥ अणासवा थूलवया कुसीला । मिउंपि चंडं पकरंति सीसा ॥ चित्ताणुया लहु दक्खोववेया । पसायए ते हु दुरासयं पि ॥१३॥ पिडं व संजए ॥ पाए पसारिए वावि । न चिट्ठे गुरुणंतिए ॥१९॥ आयरिएहिं वाहित्तो ॥ तुसिणीओ न कयाई वि । पसायपेही नियागट्ठी । उवचिट्ठे गुरु सया ॥२०॥ आलवंते लवंते वा । न निसीएज्ज कयाइ वि । चइऊण आसणं धीरो । जओ जुत्तं पडिस्सुणे ॥२१॥ आसणगओ न पुच्छिज्जा ॥ नेव सेज्जा गओ कयाइ वि । आगम्मुकुडुओ संतो । पुच्छिज्जा पंजलीउडो ॥२२॥ एवं विणय जुत्तस्स । सुत्तं अत्थं च तदुभयं । पुच्छमाणस्स सीसस्स । वागरेज्ज जहासुयं ॥२३॥ मुसं परिहरे भिक्खू । न य ओहारिणिं वए ॥ भासा दोसं परिहरे । मायं च वज्जए सया ॥२४॥ न लवेज्ज पुठो सावज्जं । न निरट्टं त मम्मयं । अप्पणट्टा परट्टा वा । उभयस्संतरेण वा ॥२५॥ समरेसु अगारेसु । संधीसु य महापहे ॥ एगो एगित्थिए सद्धिं । नेव चिट्ठे न संलवे ॥२६॥ जं मे बुद्धाणुसासन्ति । सीएण फरुसेण वा । मम लाभो त्ति पेहाए । पयउत्तं पडिस्सुणे ॥२७॥ अणुसासणमोवायं । दुक्कडस्स य चोयणं । हिवं तं मन्नइ पन्नो । वेसं होइ असाहुणो ॥२८॥

पाठ १२ उत्तराध्ययन

सुयं मे आउसं तेणं । भगवया एवमक्खायं । इह खलु वावीसं परीसहा । समणेण । भगवया । महावीरेणं । कासवेणं पवेइया । जे भिक्खु सोच्चा । नच्चा । जिच्चा । अभिभूय । भिक्खायरियाए । परिक्खयंतो । पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ॥

कयरे खलु । ते वावीसं परीसहा । समणेणं भगवया महावीरेणं । कासवेणं पवेइया । जे भिक्खु । सोच्चा । नच्चा । जिच्चा । अभिभूय ॥ भिक्खायरियाए । परिक्खयंतो । पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ।

इमे खलु ते वावीसं परीसहा । समणेणं भगवया । महावीरेणं । कासवेणं पवेइया । जे भिक्खू । सोच्चा । नच्चा । अभिभूय । भिक्खायरियाए । परिक्खयन्तो । पुट्ठो नो विहन्नेज्जा । तज्जहा । दिगंछा परीसहे । पिवासा परिसहे । सीय परीसहे । उसिण परीसहे । दंसमसय परीसहे । अचेल परिसहे । अरइ परीसहे । इत्थी परीसहे । चरिया परिसहे । निसीहिया परीसहे । सिज्जा परीसहे । अकोस परीसहे । वह परीसहे । जायणा परीसहे । अलाभ परिसहे । रोग परीसहे । तण फास परीसहे । जल्ल परिसहे । सक्कार पुक्कार परीसहे । पन्ना परीसहे । अन्नाण परीसहे । दंसण परीसहे । परीसहाणं पविभत्ती । कासवेणं पवेइया । तं भे उदाहरिस्सामि । आणुपुब्बिं सुणेह मे ॥१॥ दिगिच्छा परिगए देहे । तवेसी भिक्खू थामवं । न छिदे न छिंदावए । न पए, न पयावए ॥२॥ काली पव्वंग संकासे । किसे धमणि संतए । मायन्ने असण पाणस्स । अदिण मणसो चरें ॥३॥ एवमावट्ट जोणीसु । पाणिणो कम्मकिब्बिसा । न नविज्जंति संसारे । सव्वट्टेसु व्व खत्तिया ॥४॥ कम्म संगेहि संमूढा । दुखिया बहु वेयणा । अमाणुसासु जोणीसु । विणीहम्मति पाणिणो ॥५॥ कम्माणं तु पहाणाए । आणुपुब्बी कयाइ उ । जीवा सोहिमणुपत्ता । आययंति मणुस्सयं ॥६॥ माणुस्सं विगहं लुग्धं । सुइ धम्मस्स दुल्लहा । जं सोच्चा पडिवज्जंति । तव खंतिमहिंसयं ॥७॥ आहच्च सवणं लुग्धं । सद्धा परमदुल्लहा । सोच्चा नेयाउयं मग्गं । वहबे परिभवस्सइ ॥८॥

पाठ १३ उत्तराध्ययन

हिंसे बाले मुसावाई। माइल्ले पिसणे सढे। भुंजमाणे सुरं मस्सं। सेय मेयं ति मन्नइ ॥९॥ कायसा वयसा मित्ते। चित्ते गिद्धे य इत्थिसु दुहओ मल संचिणइ। सिसुणागु व्व मदियं ॥१०॥ तओ पुट्टो अयंकेण। गिलाणो परितप्पइ पभाओ परलोगस्स। कम्मणुप्पेहि अप्पणो ॥११॥ सुया मे नरए ठाणा ॥ असीलाणं च जा गइ ॥ बालाणं कूर कम्माणं। पगाढा जत्थ वेयणा ॥१२॥ तत्थोवआहुयं ट्ठाण। जह मेतमणुस्सुयं। आहाकम्मेहि गच्छंतो। सो पच्छा परितप्पइ ॥१३॥ जहा सागडिउ ज्जाणं। समहिच्च च्चा महापहं। विसम मगामोइत्तो अक्खे भणमि सोयइ ॥१४॥ एवं धम्म विउक्कमं। अहम्मं पडिवजिया। वाले मच्चु मुहं पत्ते। अक्खे भग्गे व सोयइ ॥१५॥ तओ से मरणंतंमि। वाले संतस्सइ भया। अकाम मरणं मरइ धुत्ते वा कलिणा जिए ॥१६॥ एयं अकाम मरणं। बालाणं तु प्पवेइयं। इत्तो सकाम मरणं। पंडियाणं सुणेहंमे ॥१७॥ मरणं पि सपुत्ताणं। जहा मेत्तमणुस्सुयं। विप्पसन्नमणाघाय। संजयाणं वुसीमओ ॥१८॥ न इमं सव्वेसु भिक्खुसु। न इमं सव्वेसु गारिसु। नाणा सीला अगारत्था। विसमेसीला य भिक्खुणो ॥१९॥ संति एगेहिं भिक्खूहिं। गारत्था संजमुत्तरा। गारथे इह सव्वेहिं। साहवो संयमुत्तरा ॥२०॥ वीराजिणंति गणिणं। जडी संघाडि मुडिणं। एयाणि विन्न तायंति। दुस्सीलं परियागये ॥२१॥ पिडोलंए वा दुस्सीले। नरगाउ न मुच्चई। भिक्खाए वा गिहत्ये वा सुव्वइ गमई दिवं ॥२२॥ अगारि सामाइयंगाय। सड्डी काएण फासए। पोसहं दुहवो पक्खं। एगराय न हावए ॥२३॥ एवं शिखा समावन्ने। गिहवासे वि सुव्वए। मुच्चइ छवि पव्वाओ। गळे जखस्सलोगयं ॥२४॥ अह जे संवुडे भिक्खु। दुण्हं अण्णयरे सिया। सव्वदुख पहिणेवा। देवे वावि महिड्डिए ॥२५॥ उत्तराइ विमोहाइ। जुइमंताणुपुव्वसो। समाइंनांहिं जखेहिं। आवासाइं जसंसिणो ॥२६॥ दीहाउया इड्डिमन्ता। समीद्धा काम रुविणो। अहुणोववन्न संकासा भुजो अच्चिमासमयभा ॥२७॥ ताणि ट्ठाणणि गच्छंति सिक्खित्ता संजमं तवं। भिक्खाए वा गिहत्ये वा जे संति परिनिवुडा ॥२८॥ तेसि सुच्चा सपुज्जाणं संजयाण वुसीमओ। न संत संति मरणंते ॥

